

॥ ६ ॥ बहु उठरंगें जइ पियुसंगें, सघली वात सुणा
वे रे ॥ सुजगे साज पुत्रनो होशे, पियुनां वचन व
धावे ॥ एहने० ॥ ७ ॥ स्वपनाफल पूठी पाठकने,
गर्ज बहे नृपराणी रे ॥ दीप कहे इम प्रथम वधा
यो, गावे सुर इंद्राणी ॥ एहने० ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ वधावो वीजो ॥

॥ आवण वरसे रे सुजनी ॥ ए देशी ॥

वीजे वधावे रे सुजनी, चैतर शुदि तेरशनी रजनी ॥
जन्म्या जिनवर जग उपकारी, हुं जाळं तेहनी वखि
हारी ॥ वीजे वधावे रे सुजनी ॥ १ ॥ ठप्पन दिशि
कुमरी तिहां थावे, पूजी शुचिजलशुं न्हवरावे ॥ जीवो
महीधर खगें जिनराया, अविचल रहेजो त्रिशखाना
जाया ॥ वी० ॥ २ ॥ गिरुआ प्रनुनुं वदन निहासी,
तासी चोपें चतुरा वासी ॥ हरख्यो सुरपति सोदम
नी, जाणी जन्म्या जगविश्रामी ॥ वी० ॥ ३ ॥ घो
घंटा तव वजडावे, ततदाण देव सह तिहां थावे ॥
ग्रही कंचनगिरि पर ठावे, स्नान करी जितनें
जावे, ॥ वी० ॥ ४ ॥ एक कोट वस्ती ऊपर
खाख संख्या परमाणो ॥ सद्गु
खशुं जरिया, जस

॥ ५॥ चिते लघुवय ते प्रभु वीर, केम सहेसो जख
 धारा नीर ॥ वीरें तस मन संशय जाणी, करया चि
 त्रित अतिशय नाणी ॥ धी० ॥ ६॥ माहावीर निज अंगु
 ठे चंप्यो, ततदाण मेरु थर हर कंप्यो ॥ मानुं नृत्य
 करे ठे रसियो, प्रभुपद फरसें यइ उल्लसियो ॥ धी०
 ॥ ७॥ जाण्युं इंद्र सद्यु विरतंत, पोसे वर जोडी जन
 वंत ॥ गुनहो संघवनो ए सहेजो, मिथ्या दुःकृत
 एहनं होजो ॥ धी० ॥ ८ ॥ स्नात्र करी माताने स
 भपें, ठवि पदोता नंदीश्वर छीपें ॥ पूरण खाहो रे
 सेवा, अछाइ महोत्सव तिहां करेवा ॥ धी० ॥ ९॥ पुत्र
 वधाई निमुणी राजा, पंच शब्द वजडावे वाजां ॥ नि
 ज परिकर संतोपी वारू, वर्ज्जमान नाम ठवे उदारु ॥
 धी० ॥ १० ॥ अनुक्रमें जोवन वय जव थावे, नृपति
 राजपुत्री परणावे ॥ जोगवी प्रभु संसारिक जोग,
 दीप कहै मन प्रगळ्यो जोग ॥ धी० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ वधावो व्रीजो ॥

॥ जवि तुमें वंदो रे सूरेश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥
 हवे कल्याणक व्रीजुं घोखुं, जगगुरु दीक्षा करुं ॥ दर्पित
 चितें जावें गावे, तेहनं जाग्य जखेरुं ॥ सहि तुमें स
 वो रे, कल्याणक उपकारी ॥ संयम मेवो रे, आ

तमनें हितकारी ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अमृतवयणें,
 प्रभुनें एम सुणावे ॥ बूज बूज जगनायक लायक,
 एम कहीने समजावे ॥ स० ॥ २ ॥ एक क्रोड नें
 आठ लाखतुं, दिनप्रत्ये दीये दान ॥ इण्णिपरें संव
 स्सर लगें छईने, दीन वधारे वान ॥ स० ॥ ३ ॥ नें
 दिवर्द्धननी अनुमति लेईने, वीर थया उजमाल ॥
 प्रभुदीक्षानो अवसर जाणी, आव्यो हरि ततकाल
 ॥ स० ॥ ४ ॥ थापी दिशि पूरवनी साहामा, दीक्षा
 महोत्सव कीधो ॥ पालखीयें पधरावी प्रभुनें, लाज
 अनंतो लीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ सुरगण नरगणने स
 मुदायें, दीक्षायें संचरिया ॥ माता धाव कहे शिखा
 मण, सुण त्रिशला नानडिया ॥ स० ॥ ६ ॥ मोह म
 ह्मनें जेर करीने, धरजो उज्ज्वल ध्यान ॥ केवल क
 मला वहेली वरजो, देजो सुरुत दान ॥ स० ॥ ७ ॥
 एम शिखामण सुणते सुणते, थुणते बहु
 मुष्टिनो लोच करीने, आप थया
 ॥ ८ ॥ धन्य धन्य श्री :
 लाना जाया ॥ धन्य धन्य नंदी
 ॥ ९ ॥ सुर ॥ स० ॥ १० ॥ अनुमति
 विचरे जगदाधार ॥ समिन्नि

(५)

गुप्ता, जीवदयाननार ॥ सां० ॥ १० ॥ सिंह समोवड
धुंर थईने, कठिन कर्म सहु टाळे ॥ जगजयवंतो
शासननायक, इणिपर दीक्षा पाळे ॥ सां० ॥ ११ ॥
दीक्षाकल्याणक ए ग्रीजुं, सहि तुमें दिलमां छावो ॥
एम वधावो ग्रीजो सुंदर, दीप कहे सहु गावो ॥
सां० ॥ १२ ॥ इति ग्रीजो वधावो संपूर्ण ॥

॥ वधावो चोथो ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें, रंग लागो मोरी सुजनी
जी ॥ ए देशी ॥

॥ चोथुं कल्याणक केवलनुं, कहुं हुं अवसर पामी
जी ॥ जग उपकारी जगबंधवने, हुं प्रणमुं शिर नामी ॥
सांजल सुजनी जी ॥ १ ॥ वैशाख शुदि दशमीने दिवसें,
पाम्या केवल ज्ञान जी ॥ धार जोयण एक रातें चा
ल्या, जाणीं छाज निधान ॥ सां० ॥ २ ॥ अर्प्यापा न
यरीयें आख्या, महसेन वन विकसंत जी ॥ गणध
रनें वल्ली तीरथ थापन, करवाने गुणवंत ॥ सां० ॥
॥ ३ ॥ जुवनपति व्यंतर वैमानिक, ज्योतिपी हरि
समुदाय जी ॥ वीश वत्रीश दश दोय मलीनें, ए
चोशठ कहेवाय ॥ सां० ॥ ४ ॥ त्रिगडानी रचना
करि सारी, त्रिदशपति अति ज्ञारी जी ॥ मध्य पीठ

तमनें हितकारी ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अमृतवयणें,
 प्रनुनें एम सुणावे ॥ बूज बूज जगनायक लायक,
 एम कहीने समजावे ॥ स० ॥ २ ॥ एक फोड नें
 आठ साखनुं, दिनप्रत्ये दीये दान ॥ इणिपरें संव
 त्तर सगें लईने, दीन पधारे यान ॥ स० ॥ ३ ॥ नें
 दिवळननी अनुमति खेडने, धीर यया उजमाख ॥
 प्रनुदीदानो अक्सर जाणी, आठयो हरि ततकाख
 ॥ स० ॥ ४ ॥ चापी दिशि पूरवनी साहामा, दीक्षा
 महोत्सव कीधो ॥ पाखळीयें पधरावी प्रनुनें, खान
 अननो खीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ सुरगण नरगणने स
 मुदायें, दीक्षायें संचरिया ॥ माता धाय कहे शिखा
 मण, मुण त्रिशळा नानडिया ॥ स० ॥ ६ ॥ मोह म
 खनें जेर करीने, धरजो उज्ज्वल ध्यान ॥ केंवल क
 मळा वदेखी वरजो, देजो सुकृत दान ॥ स० ॥ ७ ॥
 एम शिखामण मुणते मुणते, युणते बहु नर नारी ॥
 पंच मुष्टिनो खोच करीने, आप यया व्रनधारी ॥
 ॥ स० ॥ ८ ॥ धन्य धन्य श्री सिद्धारथनंदन, धन्य
 त्रिशळाना जाया ॥ धन्य धन्य नेंदीवळन पंधव,
 एम योखें सुरगाया ॥ स० ॥ ९ ॥ अनुमति खेडनिग्रंथ
 वनी, विचरे जगदाधार ॥ समितियें समिता गुप्तियें

गुप्ता, जीवदयाजंमार ॥ स० ॥ १० ॥ सिद्ध समोवढ
 दुर्द्धर धईनें, कग्निन कर्म सद्गु टाले ॥ जगजयवंतो
 शासननायक, इण्णिपरें दीक्षा पासे ॥ स० ॥ ११ ॥
 दीक्षाकल्याणक ए ग्रीजुं, सहि तुमें दिसमां खावो ॥
 एम वधावो ग्रीजो सुंदर, दीप कहे सद्गु गावो ॥
 स० ॥ १२ ॥ इति ग्रीजो वधावो संपूर्ण ॥

॥ वधावो चोयो ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें, रंग लागो मोरी सुजनी
 जी ॥ ए देशी ॥

॥ घोयुं कल्याणक केवलनुं, फहुं तुं अयसर पामी
 जी ॥ जग उपकारी जगबंधवने, हुं प्रणमुं शिर नामी ॥
 सांजल सुजनी जी ॥ १ ॥ वैशाख शुदि दशमीने दिवसें,
 पाम्या केवल ज्ञान जी ॥ घर जोयण एक रातें चा
 व्या, जाणी खान निधान ॥ सां० ॥ २ ॥ अष्पापा न
 यरीयें आव्या, महसेन वन विकसंत जी ॥ गणध
 रनें बली तीरथ थापन, करवाने गुणवंत ॥ सां० ॥
 ॥ ३ ॥ जुवनपति व्यंतर घेमानिक, ज्योतिपी हरि
 समुदाय जी ॥ घीश घत्रीश दश दोय मलीनें, ए
 चोशठ कहेवाय ॥ सां० ॥ ४ ॥ त्रिगडानी रचना
 करि सारी, त्रिदशपति अति जारी जी ॥ मध्य पीठ

ऊपर हितकारी, वेग जग उपकारी ॥ सां० ॥ ५ ॥ गुण
 पांत्रीश सहित प्रजुवाणी, निसुणे ठे सहु प्राणी जी ॥
 लोकांलोक प्रकाशक वाणी, वरसे ठे गुणखाणी ॥ सां०
 ॥ ६ ॥ मालकोश शुजराग समाजें, जलधरनी परें
 गाजे जी ॥ आतपत्र प्रजु शिरपर राजे, जामंरुज
 ठवि ठाजे ॥ सां० ॥ ७ ॥ नीकी रचना त्रणे गढनी,
 प्रजुनां चारे रूप जी ॥ वली केवल कमलानी शो
 ना, निरखे सुर नर झूप ॥ सां० ॥ ८ ॥ इंद्र जूति
 आदें सहु मलीनें, जगन करे जूदेव जी ॥ विद्या वे
 दतणा अज्यासी, अजिमानी अहमेव ॥ सां० ॥ ९ ॥
 इहानी आव्या निसुणी कानें, मनमें गर्व धरंत जी ॥
 आव्यो त्रिगडे वाद करेवा, दीठो जगजयवंत ॥
 सां० ॥ १० ॥ ततरुण नामादिक बोलावे, तुल्य
 सहुने जाणी जी ॥ जीवादिक संदेह निवारी, था
 प्यो गणधर नाणी ॥ सां० ॥ ११ ॥ त्रिपदिपामी प्र
 जु शिर नामी, छादशांगी सुविचारी जी ॥ पद ठ
 लाख ठत्रीश सहस्सनी, रचना कीधी सारी ॥ सां०
 ॥ १२ ॥ चाखो तो जोवाने जइयें, बंदीजें जगवीर
 जी ॥ वली प्रणमीजें सोहम पटधर, गोतम
 स्वामी वजीर ॥ सां० ॥ १३ ॥ निरखीजें प्रजुजीनी

मुझा, नरजय सफाखो कीजें जी ॥ प्रजुजीनुं घहु मा
 न करीने, छाज अनंतो खीजें ॥ सां० ॥ १४ ॥ पारें
 पारें कहुं तुं तो पण, तुं तो मनमां नाणे जी ॥ स
 हारा मनमां होश अठे ते, केवल झानी जाणे ॥
 सां० ॥ १५ ॥ सखिवयणें एम थई उजमाखी, चाखी
 सपखी वाखी जी ॥ निमुणी दश आशातना टाखी,
 प्रजुवाणी सटकाखी ॥ सां० ॥ १६ ॥ इणीपरें ग्रीश
 वरश केवलथी, घहु नर नारी तारी जी ॥ इम व
 धावो चोथो सुंदर, दीप कहे मुखकारी ॥सां०॥१७॥

॥ वधावो पांचमो ॥

॥ आदिजिनेसर विनति हमारी ॥ ए देशी ॥

॥ कळ्याणक पांचमुं जिनजीनुं, गावो हर्ष अपार वा
 ला ॥ जगवल्लज प्रजुना गुण गाई, सफाख करो अव
 तार वाळा ॥ शासननायक तीरथ वंदो ॥१॥ ए आं
 कणी ॥ जग चातकने दान दीयंता, विचरंता ज ग
 जाण वाळा ॥ मध्य अपापा नगरी पधाख्या, प्रणमे प
 द महिराण वाळा ॥ शा० ॥ २॥ प्रजुयें लाजाळाज
 विचारी, अणपूठ्यो उपदेश वाळा ॥ शोख पहोर
 लगें अमृतवाणी, वरस्या जवि उपदेश वाळा ॥शा०
 ॥ ३॥ दीवालीदिने मुक्ति पधाख्या, पाम्या पर

मानंद वाला ॥ अजर अमरपद ज्ञान विलासी, अ
 क्षय सुखनो कंद वाला ॥ शा० ॥ ४ ॥ ए प्रभु कर्ता
 अकर्ता जोक्ता, निजगुणें विलसंत वाला ॥ दर्शन
 ज्ञान चरण नें वीरज, प्रगट्या सादि अनंत वाला ॥
 शा० ॥ ५ ॥ ठे आकाश असंख्य प्रदेशी, तेहना गु
 ण ठे अनंत वाला ॥ ए तो एक प्रदेशें साहिव, अ
 नंत गुणें जगवंत वाला ॥ शा० ॥ ६ ॥ ए प्रभु ध्येय
 ने सेवक ध्याता, एहमां ध्यान मिलाय वाला ॥ त्रिक
 जोगें पूरणता प्रगटे, सेवक ए सम धाय वाला ॥
 शा० ॥ ७ ॥ गावो पांचमो मोक्ष वधावो, ध्यावो वीर
 जिणंद वाला ॥ शुजलेश्यायें जग गुरु ध्यानें, टालो
 जवजय फंद वाला ॥ शा० ॥ ८ ॥ इम प्रभु वीरत
 णां कल्याणक, पांच जवोदधि नाव वाला ॥ श्रीवि
 जयलक्ष्मी सूरीश्वर राजें, में गाया शुज जाव वाला
 ॥ शा० ॥ ९ ॥ श्रीजिनगणधर आणारंगी, कपूरचं
 द विश्राम वाला ॥ तस आग्रह्यी हर्षित चित्तें, खं
 ज्ञात नयर सुगम वाला ॥ शा० ॥ १० ॥ पंडित
 श्रीगुरु प्रेमपसायें, गाया तीरथराज वाला ॥ दीपवि
 जय कहे मुजने होजो, तीरथफळ माहाराज वाला
 ॥ शा० ॥ ११ ॥ इति पांच वधावा संपूर्ण ॥

(९)

॥ अथ श्री गहूंखियो सखी ठे ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम गहूंली ॥

॥ कुंवर पगळे पग दहने चडिया ॥ ए देशी ॥

॥ रूडी गहूंली रंग रसाली, जिनशासनमांहे नित्य
रे दीवाली ॥ रूडी राजगृही अति शोहे, ते देखी त्रिजु
वन मन मोहे ॥ १ ॥ तिहां तो वीर आव्या रे चोमासें,
राजा श्रेणिक चंदे उवासें ॥ तस अजय कुंवर प्रधान,
मंत्री घट्ट बुद्धिनिधान ॥ २ ॥ राजा श्रेणिकनी घर
नार, शिरोमणि चेजणा सार ॥ चार व्रतनी साढी
ज पहेरी, नव वाढनी घाटडी घहेरी ॥ ३ ॥ पहेख्यां
जिनगुणचूपण थंगें, गुरुगुण गावे मन रंगें ॥ सम
कित कचोयुं रे जरियुं, श्रद्धामांहे कुंकुम घोळियुं
॥ ४ ॥ पंचाचार ते पंच रतन, ठवणी उपरें करो रे
जतन ॥ मन निर्मल मोती वधावे, ते तो शिवरम
णीसुख पावे ॥ ५ ॥ बुध न्यायसागरनो शिष्य, जे
जणशे जिनगुण जगीश ॥ तस घर होय कोडी
कट्याण, वली पामे मोक्ष सुजाण ॥ ६ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ श्री गहूंली चीजी ॥

॥ वाली माहारो आव्या श्रीगोकुल गाम रे ॥ एदेशी ॥

॥ चंद्रवदनी मृगलोयणी, एतो सजि शोले शण्णार
 रे ॥ एतो थावी जगगुरु वांदवा, धरि हेडे हर्पे अ
 पार रे ॥ १ ॥ एतो मुक्ताफल मूठी जरी, रचे गहूंली
 परम उदार रे ॥ जिहां वाणी जोजन गामिनी, घन
 वरसे अखंभित धार रे ॥ २ ॥ हांरे जिहां रजत क
 नक रत्नना, सुररचित त्रण प्राकार रे ॥ तस मध्यम
 णिसिंहासने, शोजित श्रीजगदाधार रे ॥ ३ ॥ जि
 हां नरपति खगपति लसपति, सुरपति युत पर्पदा
 वार रे ॥ लब्धिनिधान गुण आगरु, जिहां गौतमादि
 गणधार रे ॥ ४ ॥ जिहां जीवादिक नव तत्त्वना, प
 द्मद्रव्यजेद विस्तार रे ॥ ए तो श्रवण सुणि निर्मल
 करे, निज बोध बीज सुखकार रे ॥ ५ ॥ जिहां त्रण
 ठत्र त्रिजुवन उदित, सुर ढालत चामर चार रे ॥ सखि
 चिदानंदकी वंदना, तस होजो वारंवार रे ॥ ६ ॥ २ ॥

॥ अथ श्री गहूंली त्रीजी ॥

॥ घरे थावोजी थांवो मोरीयो ॥ ए देशी ॥
 ॥ माहावीरजी थावी समोसख्या, राजगृही नयरी उद्या
 न ॥ समवसरण देवें रच्युं, तिहां वेठा श्रीवर्द्धमान ॥
 माहा० ॥ १ ॥ वनपालके थापी वधामणी, हरख्यो
 श्रेणिक जूपास ॥ गौतम थादि गणधर, साधवी ठ

त्रीश हजार ॥ माहा० ॥ २ ॥ राजा गज शणगाख्या मल
 पता, तूर्यतणो नहिं पार ॥ राजा बहु सामग्रीयें संच
 स्यो, साथें मंत्री अजयकुमार ॥ माहा० ॥ ३ ॥ ढोल ददा
 मा गडगढे, सरणाइ अतिहि रसाल ॥ राय गजयकी
 हेठा ऊतस्या, थावी वांदे प्रजुजीना पाय ॥ माहा०
 ॥ ४ ॥ राय त्रण प्रदक्षिणा देई करी, थावी वेठा सजा
 मोजार ॥ राणी चेलणा लावे गहूं थली, साथें सखि
 योनो परिवार ॥ माहा० ॥ ५ ॥ राणियें घाट उढ्यो रे
 घुटा तणो, राणी चेलणानो शणगार ॥ राणियें कुंकुम
 घोढ्यां कुंकावटी, राणियें लीधुं श्रीफल श्रीकार ॥
 माहा० ॥ ६ ॥ राणी चेलणा पुरे गहूं थली, माहा
 वीरना पावखा हेठ ॥ राणी बहु परिवारें परबरी,
 राणी गावे गीत रसाल ॥ माहा० ॥ ७ ॥ राणी ल
 ली लली लीये रे लूंढणां, राणी पूजे प्रजुजीना पाय ॥
 माहावीरनी देशना सांजली, समकित पाम्यो नर
 राय ॥ माहा० ॥ ८ ॥ प्रजु तुमसरिखा गुरु मुऊ मढ्या, म
 हारी छुर्गति दूर पलाय ॥ प्रजु सेवक जाणी तार
 जो, मुने मुक्ति तणां सुख थाय ॥ माहा० ॥ ९ ॥
 ॥ अथ श्री जीवाज्ञिगम सूत्रनी गहूंली थोथी ॥
 ॥ जवि तुमे वंदो रे सूरेश्वर गन्नराया ॥ १० ॥

॥ સહિયર સુણીયેં રે જીવાજિગમની વાણી, મીઠી
 લાગે રે મુજને ધીરની વાણી ॥ ૯ ॥ આંકણી ॥ સૂત્ર
 તણી રચના ગણધરની, અર્થ તે ધીરેં જાંઘ્યા ॥ ગોત
 મ પૂઠે બે કર જોડી, આતમહિત કરી દાઢ્યા ॥ સ૦
 ॥ મી૦ ॥ ૧ ॥ જીવ અજીવ તણી જે રચના, પૂઠી
 ગોતમસ્યામી ॥ નરક નિગોદ તણી જે વાતો, જાં
 લે અંતરજામી ॥ સ૦ ॥ મી૦ ॥ ૨ ॥ સાતે નરક
 તણાં હુઃખ જાંઘ્યાં, આતમહિત કરી શીઠ્યા ॥ જે
 જે પ્રશ્ન પૂઠે ગોચર, તે તે પ્રતુર્જીયેં જાંઘ્યા ॥ સ૦
 ॥ મી૦ ॥ ૩ ॥ પાંચ અનુત્તર તણી જે રચના, વિચિ
 થ પ્રકારેં જાંઘ્યા ॥ જીવિક જીવને મુણવા કારણ,
 શ્રી જિન આગમ સાચી ॥ સ૦ ॥ મી૦ ॥ ૪ ॥ મીઠી
 વાણીયેં ગઢુંસી ગાથે, ધીર જિણંદ વધાવે ॥ નમ્નિક
 પૂરે ગાય ધરીને, અદ્ભુતે કરીને વધાવે ॥ સ૦ ॥ મી૦
 ॥ ૫ ॥ નોતનપુરમાં રંગે ગાદે, ગઢુંસી પદને ઝમંગે ॥
 કહે મુક્તિ જિનરાજની વાણી, મુણજો અતિ ઘઠ
 રંગે ॥ સ૦ ॥ મી૦ ॥ ૬ ॥ इति ॥ ૪ ॥

॥ અથ શ્રી જગવતીસૂત્રની ગઢુંસી પાંચમી ॥

॥ જીવ તુમેં ઘંદો રે, મૂરીશ્વર મઝરાયા ॥ ૯ ॥ દેશી ॥

॥ સહિયર સુણીયેં રે, જગવતીસૂત્રની વાણી ॥ પાત

क. हृणीये रे, आत्मने हित आणी ॥ ए आंकणी ॥
 समकितधंत तणी एकरणी, जयसागर उद्धरणी ॥ न
 रकनिगोद तणी गति हरणी, मोहनणी नीसरणी ॥
 स० ॥ १ ॥ पंचम अंग विधादपन्नती, धीजुं जगवती
 नाम ॥ शतक एकतालीश पदु उद्देशें, अनेंतानंत गु
 णधाम ॥ स० ॥ २ ॥ धीर जगत गुरु मोक्षम गणधर,
 जोडी मोहनगारी ॥ प्रश्न त्रयीश हजार प्रकाश्या,
 वाणीनी वलिदारी ॥ स० ॥ ३ ॥ गंगमुनि सिंहा
 मुनिवरना, प्रश्न सरस ठे जेदमां ॥ जाय जेद पद
 इत्य प्रकाश्यां, अमृतम ठे एदमां ॥ स० ॥ ४ ॥
 संध्याम मोनी प्रमुख जे जावी, समकितधंत प्रमिळो ॥
 प्रश्ने कंचन मार त्रीने, नरनव लाहो लीधो ॥ स०
 ॥ ५ ॥ स्वस्तिक मुक्ताफलशुं वधावो, ज्ञान नक्ति
 गुरु मेवा ॥ जगवती अंग सुणो बहु जावें, चाखो
 अमृत मेवा ॥ स० ॥ ६ ॥ वीरधेनना सकल संघने,
 विघ्न हरे वरदाई ॥ दीपविजय कहं जगवती सुण
 तां, संगल कोटि वधाई ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥
 ॥ अथ श्री गह्वरी ठां ॥
 ॥ चाखोने वाई चाखोने जुठ, सोदम गणधर रन
 ना रे ॥ चाखोने वाई चाखोने ॥ ए आंकणी ॥

राजगृही नगरी सोहामणी, तस वनमां सोव
 आव्या रे ॥ राजा कोणिक वंदन आवे, जाव
 ने वधावे रे ॥ चा० ॥ १ ॥ चतुरंगिणी सेना
 आवे, आनंद मंगल पावे रे ॥ बहु युक्तें करी सो
 वांदे, राजा मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ २ ॥
 मुनि तपसी केइ व्रतधारी, केइ संजमना रसि
 रे ॥ केइ मुनि जिन आणाने धारे, वारे विषय
 पाया रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ प्रत्येकें सहु मुनिने वांदे,
 जल पार उतरवा रे ॥ रजत रकेवी हाथ धरी
 सोहमस्वामी वधावे रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ चिहुं ग
 वारक साथीयो पूरे, मोतीयाळें वधावे रे ॥ पद्म
 ती राणी मनरंगें, शोल सज्या शणगार रे ॥ चा० ॥ ५ ॥
 बहु सखीने परिवारें राणी, मनमां उलट आणी रे
 कोणिक राजा देशना निसुणे, वाणी अमृत सर
 रे ॥ चा० ॥ ६ ॥ जाव धरीने राजा राणी, अन्निनव
 सुणी वाणी रे ॥ जलधर वाणी निसुणी राजा,
 ज्यां सुजशनां वाजां रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ जुजपुर मं
 ण चिंताचूरण, श्रीचिंतामणि स्वामी रे ॥ चि
 गति चूरण गहूंली गाई, संधने सदा वधाई रे
 चा० ॥ ८ ॥ जे गहूंली गाशे मनरंगें, तस घ

रे ॥ पगले पगले रत्न जडावूं, डगले डगले हीरा
 ए देशी ॥ चालो रे वाइ चालो रे जूठ, गौतम स्व
 नी रचना रे ॥ लब्धिवंत गुणवंता गिरुवा, करता सं
 जतना रे ॥ चा० ॥ १ ॥ ठठे वरसें दीक्षा लीधी, ते
 मुनि ठे साथें रे ॥ जिनथाणायी संजम पाले,
 वा शिव वधू हाथें रे ॥ चा० ॥ २ ॥ केइ मुनि
 धर पद सेवे ठे, केइ मुनि ध्यान धरे ठे रे ॥
 मुनि आगम दान दिये ठे, केइ मुनि विनय क
 रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ केइ मुनि चउ अनुजोग जणे
 केइ मुनि जोग वहे ठे रे ॥ केइ मुनि पूर्य सूत्र
 ठे, केइ मुनि अर्थ ग्रहे ठे रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ केइ
 मास खमण तप धारी, केइ मुनि तपिया कहीयें रे
 इ मुनि विगय तणा परिहारी, केइ मुनि आनम
 य रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ केइ आचारांग सूपगडांग ठाण
 केइ समवायांग गोखे रे ॥ जगवती सूत्र प्रमुख
 आगम, जणी आतमरस पोखे रे ॥ चा० ॥ ६ ॥
 सद्गु सद्दित्थर गुणशीला वनमां, आधी गण
 यदि रे ॥ अमृतथी पण अधिक्री वाणी, निरु
 मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ पटोघर आ

गहंली पूरी, मुक्ताफलशुं वधाया रे ॥ धन्य धन्य
 माता पृथ्वी जेणियें, गौतम गणधर जाया रे ॥ चा०
 ॥ ८ ॥ प्रभु वाणी निज चित्त समरती, परपद निज
 घर थावे रे ॥ दीपविजय कहे गोतम नामें, माहा
 मंगल पद पावे रे ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ गहंली नवमी ॥

॥ जयो तप रोहणी ए ॥ ए देशी ॥

॥ चंपा नगरी उद्यानमां ए, आख्या सोहम गणधा
 र ॥ नमो गुरु जावशुं ए ॥ हर्षपुरित नगरीजना ए,
 वांदवा जाय उजमाल ॥ नमो० ॥ १ ॥ कोणिक रा
 य तव पुठतो ए, आज किश्यो उत्सव थाय ॥
 ॥ नमो० ॥ इंद्र उत्सव के कौमुदी ए, एवढां लोक
 किहां जाय ॥ नमो० ॥ २ ॥ के कोइ जैनमुनि आ
 विया ए, के तिहां जाये सवि जन्न ॥ न० ॥ तेह क
 हे प्रभु सांजलो ए, हर्ष करीनं मन्न ॥ न० ॥ ३ ॥
 तय कोणिकें वान सांजली ए, उधुर्सा साते धान ॥
 ॥ न० ॥ गज रथ पायक सज्जा कस्यो ए, करी वलि
 निर्मल गात्र ॥ न० ॥ ४ ॥ मस्तक मुकुट रत्नं ज
 ड्या ए, इश्य हार सोहंत ॥ न० ॥ एक सूरज ए,
 क चंद्रमा ए, ए दोय कुंमल ऊजकंत ॥ न० ॥ ५ ॥

चतुरंगी सेनायें परिवर्त्यो ए, श्रेणिक रायनो पुत्र
 ॥ न० ॥ तस राणी पद्मावती ए, नवशत अंग
 ह्या शणगार ॥ न० ॥ ६ ॥ स्वामी सुधर्मा जिहां
 अठे ए, तिहां आठ्या कोणिक राय ॥ न० ॥ पव
 आजंगम साचवी ए, जक्तियें हर्ष जराय ॥ न० ॥
 ॥ ७ ॥ साथीयो पूरे प्रेमशुं ए, चौगति दुःखवारण
 हार ॥ न० ॥ पद्मावती राणी वधावतां ए, उठासे
 अक्षत सार ॥ न० ॥ ८ ॥ करे परम गुरुवंदना ए,
 नवजल तारण नाव ॥ न० ॥ खडे मुक्तिपद शाश्व
 तुं ए, जे वादि गुरु जले जाव ॥ न० ॥ ९ ॥ इति० ॥

॥ अथ गह्वरी दशमी ॥

। समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ए देशी ॥
 । वनिता नयरी निर्मली ॥ जिनरायाजी ॥ जिहां
 ॥ १ ॥ आदिनाथ ॥ सुर नमे पाया जी ॥
 ॥ २ ॥ देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां बेठा
 ॥ सु० ॥ १ ॥ कंचनकांति तनु दीपती ॥
 ॥ २ ॥ जस चास ॥ सु० ॥ दीर्घजुजा
 जि० ॥ तस रुढां नयन विशास ॥ सु
 अमरना इंदसा ॥ जि० ॥ तेणें
 ॥ ३ ॥ सु० ॥ मुखरोनायें साजियो

शशी गणेश वसे हररोज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप तरवारें
 वारिया ॥ जि० ३ जाव रिपु जे आठ ॥ सु० ॥ मुनि
 ने शिवपद आपतां ॥ जि० ॥ जेणें वास्यो परनो
 ठाठ ॥ सु० ॥ ४ ॥ क्षमाशूर जगवंत जी ॥ जि० ॥
 चोत्रीश अतिशय धार ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें
 करी ॥ जि० ॥ देशना दे जखधार ॥ सु० ॥ ५ ॥
 वन पालकना मुग्धकी ॥ जि० ॥ तातजी आन्या
 उद्यान ॥ सु० ॥ सांजली जगत नरेसरू ॥ जि० ॥
 आपे बहुसां दान ॥ सु० ॥ ६ ॥ चतुरंगी सेना खे
 इने ॥ जि० ॥ वांच्या श्रीनगवान ॥ सु० ॥ प्रभुजीनी
 वाणी मुणें ॥ जि० ॥ चक्री जगत सुजाण ॥ सु० ॥
 ॥ ७ ॥ वखाण अवसर साथियो ॥ जि० ॥ खावे ज
 रतनी नार ॥ सु० ॥ श्रद्धाम्बस्तिक पूरीया ॥ जि० ॥
 गाये गोरी गीत उदार ॥ सु० ॥ ८ ॥ गीतारय गुरु
 आगलें ॥ जि० ॥ जे करे श्रुत बहु मान ॥ सु० ॥
 दर्शन सागर इम कहें ॥ जि० ॥ तम आये परम
 कल्याण ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ गह्वरी अग्यारमी ॥

॥ आज हजारी हांसो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नत्रयी आराधवा, आणी अधिक उमेद ॥ स

चतुरंगी सेनायें परिवस्यो ए, श्रेणिक रायनो पुत्र
 ॥ न० ॥ तस राणी पद्मावती ए, नवशत अंग ध
 र्या शणगार ॥ न० ॥ ६ ॥ स्वामी सुधर्मा जिहां
 अठे ए, तिहां आव्या कोणिक राय ॥ न० ॥ पंच
 आजगम साचयी ए, जक्तियें हर्ष जराय ॥ न० ॥
 ॥ ७ ॥ साधूयो पूरे प्रेमभुं ए, चौगति दुःखवारण
 हार ॥ न० ॥ पद्मावती राणी वधावतां ए, उठाळे
 अक्षत सार ॥ न० ॥ ८ ॥ करे परम गुरुवंदना ए,
 जवजस तारण नाव ॥ न० ॥ लहे मुक्तिपद शाश्व
 तुं ए, जे वांदि गुरु जसे जाव ॥ न० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ गह्वंली दशमी ॥

॥ समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ए देशी ॥
 ॥ वनिता नयरी निर्मली ॥ जिनरायाजी ॥ जिहां
 समोसस्या आदिनाथ ॥ सुर नमे पाया जी ॥ सम
 वसरण देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां वेठा त्रिजुवनना
 थ ॥ सु० ॥ १ ॥ कंचनकांति तनु दीपती ॥ जि० ॥
 गजसरखी जस चाख ॥ सु० ॥ दीर्घजुजा तनु दीप
 ती ॥ जि० ॥ तस रुडां नयन विशाल ॥ सु० ॥ २ ॥
 नरना अमरना इंदला ॥ जि० ॥ तेणें धुणियां चर
 णसरोज ॥ सु० ॥ मुखशोभायें लाजियो ॥ जि० ॥

शशी गयण वसे हररोज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप तरवारें
 वारिया ॥ जि० ३ जाव रिपु जे आठ ॥ सु० ॥ मुनि
 ने शिवपद आपतां ॥ जि० ॥ जेणें वाख्यो परनो
 ठाठ ॥ सु० ॥ ४ ॥ क्षमाशूर जगवंत जी ॥ जि० ॥
 चोत्रीश अतिशय धार ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें
 करी ॥ जि० ॥ देशना दे जखधार ॥ सु० ॥ ५ ॥
 घन पाखकना मुखथकी ॥ जि० ॥ तातजी आख्या
 उद्यान ॥ सु० ॥ सांजली जगत नरेसरू ॥ जि० ॥
 आपे बहुलां दान ॥ सु० ॥ ६ ॥ चतुरंगी सेना खे
 इने ॥ जि० ॥ बांधा श्रीजगवान ॥ सु० ॥ प्रभुजीनी
 वाणी सुणे ॥ जि० ॥ चकी जगत सुजाण ॥ सु० ॥
 ॥ ७ ॥ बख्ताण अवसर साधियो ॥ जि० ॥ सावे ज
 रतनी नार ॥ सु० ॥ श्रद्धास्वस्तिक पूरीया ॥ जि० ॥
 गाये गोरी गीत उदार ॥ सु० ॥ ८ ॥ गीतारथ गुरु
 आगलें ॥ जि० ॥ जे करे ध्रुत बहु मान ॥ सु० ॥
 दर्शन सागर झम फाहे ॥ जि० ॥ तस घाये परम
 फल्याण ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ गहंली अग्यारमी ॥

॥ आज हजारि हांसो प्रादुणो ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नप्रयी आराधना, आणी आधिक उमेद ॥ स

हियर मोरी हे ॥ आगम आगमधर सुणी, गुण गु
णी जाव अजेद ॥ १ ॥ सहीयर मोरी हे ॥ गहुंली
करो गुरु आगले ॥ ए टेक ॥ पर परिणामने टालवा,
लेवा शिवपुर शर्म ॥ स० ॥ ग० ॥ २ ॥ अव्य जाव
संजोगथी, जे रहे नित्य अक्षेप ॥ स० ॥ स्याद्वाद
नी दीये देशना, जाणंग नय निक्षेप ॥ स० ॥ ग०
॥ ३ ॥ आत्मजाव स्वरूपना, जासन जानु समान
॥ स० ॥ स्वपर विवेचन श्रुतयकी, तेणे जक्ति बहु
मान ॥ स० ॥ ग० ॥ ४ ॥ रुचिवंता सुश्राविका, करवा
श्रुतनी बहु जक्ति ॥ स० ॥ विनयवती बहुमानथी,
फोरवती आत्मशक्ति ॥ स० ॥ ग० ॥ ५ ॥ आत्म
वाजोठ उपरें, समकित साथियो पूर ॥ स० ॥ सली
सली करती लूठणां, मिथ्यामति करी दूर ॥ स० ॥
ग० ॥ ६ ॥ जे सुणे आगम इण विधें, जन्म सफल
होय तास ॥ स० ॥ माहरे जवो जव नित्य होजो,
ज्ञानमहोदय वास ॥ स० ॥ ग० ॥ ७ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ गहुंली चारमी ॥

॥ जीरे मारे देशना द्यो गुरुराज, उलट आणि अति घ
णो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे आयियो हपे उल्लास, पूठ दे
ई संसारने ॥ जी० ॥ १ ॥ जीरे ॥ विलंबन कीजें गुरुरा

ल, दास ठपर दया करो ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ मदेर कसो मे
 देरपान, थमृतवपनं सीधियें ॥ जी० ॥ १ ॥ जीरे० ॥ मु
 ण्णासूत्र सिद्धांत, देजें हियहुं गहगहे ॥ जी० ॥ जीरे० ॥
 जिम मोरा मन मेह, सीमाने मनं रामजी ॥ जी० ॥ ३ ॥
 जीरे० ॥ कमला मन गोविंद, पारपती ईश्वर जपे ॥ जी०
 ॥ जीरे० ॥ तिम मुक्त हृदय मगार जिनपाणी रूपे
 घणी ॥ जी० ॥ ४ ॥ जीरे० ॥ नयगम संग निहय,
 मुण्णा समकित संपजे ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ उत्पाद
 व्यय ध्रुव रूप, म्याछाद रचना घणी ॥ जी० ॥ ५ ॥
 जीरे० ॥ नवमन्य ने पट्ट उच्य, पार निहय ससनयें
 करी ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ निश्चय नं व्यषटार, इणि
 परं मुक्त उल्लासवियें ॥ जी० ॥ ६ ॥ जीरे० ॥ कृपा
 करो गुमराज, ने मुण्णा इला घणी ॥ जी० ॥ जीरे० ॥
 निज परसना रूप नामे ने मुण्णां थकां ॥ जी० ॥ ७ ॥
 जीरे० ॥ जिन उत्तम मादाराज तस पदपद्म संवे सदा
 ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ प्रगटे आत्मस्वरूप, अजय अर
 ण्णी परं जणे ॥ जीरेजी ॥ ८ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ गहृंसी तेरमी ॥

॥ आठे साखनी दर्श ॥ नयरी गजशर्ह ॥ सार, सांक
 वसे रे अपार ॥ आठे साख ॥ जंघुस्वामी समोसम्या

रे ॥ १ ॥ पंचसया परिवार, तारे नर ने नार ॥
 ॥ आ० ॥ देशना पुष्कर जलधरें रे ॥ २ ॥ इन्द्रिय
 जीपे पंच, वारे क्रोधनो संच ॥ आ० ॥ गुरुमुख
 देखी नयणां ठरे रे ॥ ३ ॥ जिनमतकज दिनकार,
 सोदम स्वामी पट्टधार ॥ आ० ॥ चरणकरण जंगार
 ठे रे ॥ ४ ॥ सोजागी शिरदार, सुविहित मुनि आ
 धार ॥ आ० ॥ पृथिवी पीठें विचरता रे ॥ ५ ॥ अ
 प्रतिबंध विहार, समरस गुण मुखकार ॥ आ० ॥ ये
 राग्यें जनताने रीक्ये रे ॥ ६ ॥ विचरे देश विदेश,
 दे बह्नुसा उपदेश ॥ आ० ॥ बूज्ये जाण अजाणने
 रे ॥ ७ ॥ कोणिक नृप घग्नार, स्वस्तिक पूरे उदार
 ॥ आ० ॥ झाननी जक्ति करे घणी रे ॥ ८ ॥ श्रुत
 जक्ति करे जेह, मुख्य विससे नर तेह ॥ आ० ॥ दर्श
 नसागर-इम बदे रे ॥ ९ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ गहंसी चोदमी ॥

॥ समुद्रविजयसुत चांदखो ॥ शामझिया जी ॥ ए. देशी ॥
 ॥ राजगृही नगरी सोदामणी ॥ गुरु थाये ठे ॥ श्री
 सोदम गणधार ॥ सुगुरु बघाये ठे ॥ पंचमया मुनि
 साथ ठे ॥ गु० ॥ आत्म सुधना करनार ॥ सु० ॥
 ॥ १ ॥ गुणशील नामें उद्यानमां ॥ गु० ॥ उत्तमा

ष वनमांघ ॥ सु० ॥ वनपालकें जइ चीनव्या ॥
 ॥ गु० ॥ ते सांजली कोणिक राय ॥ सु० ॥ २ ॥ च
 तुरंगी सेना सज्ज करी ॥ गु० ॥ गज रथ पायक नहिं
 पार ॥ सु० ॥ घणे आनंवरें राजवी ॥ गु० ॥ वांदे
 थइ उजमाल ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसार समुझने तारवा
 ॥ गु० ॥ वार वार जवजंजाल ॥ सु० ॥ शोल शण
 गार सजी करी ॥ गु० ॥ वांदे पद्मावती नार ॥ सु०
 ॥ ४ ॥ गहूंली करे मन रंगशुं ॥ गु० ॥ अकृत पूरे
 सार ॥ सु० ॥ खली खली खे ठे उवारणां ॥ गु० ॥
 प्रदक्षिणा दे मन सार ॥ सु० ॥ ५ ॥ चिहुं गति वा
 रक साथियो ॥ गु० ॥ करता मनने कोड ॥ सु० ॥
 कहे मुक्ति कर जोडिने ॥ गु० ॥ संघ मनना पूरजो
 कोड ॥ सु० ॥ ६ ॥ १४ ॥

॥ अथ गहूंली पन्नरमी ॥

॥ गर्व नकीजें रे, ण सज्जु शीखडली ॥ ए देशी ॥
 ॥ सरसती चरण नमी करी केशुं, गायशुं आगम
 वाणी ॥ अर्थ ते अरिहंतजीयें प्रकाश्यो, सूत्र ते ग
 णधर वाणी ॥ जवि तुमैं सुणजो रे, सोहम गणधर
 वाणी ॥ मीठी लागे रे, मुऊनें धीरनी वाणी ॥ १ ॥
 ण आंकणी ॥ चतुरा चालो गुरुनी पासं, गहूंली करीयें

मन रंगें ॥ नवशत श्रंग धरी शणमार, प्रभुगुण गाउ उ
 मंगे ॥ ज० ॥ २ ॥ हाये रजतरकेवी धरीने, मांहे ठीप
 ना पुत्रने लावो ॥ स्वस्तिक पूरो गुरुने वधावो, गुरु गुण
 मधुरा गावो ॥ ज० ॥ ३ ॥ राजगृही नयरे गुणशीलचे
 त्ये, तिहां प्रभु वीरजी आव्या ॥ जंजासार ते सांजली
 हरख्यो, चतुरंग सेनथी आव्या ॥ ज० ॥ ४ ॥ चौद ह
 जार मुनिराज संघातें, साध्वी सहस ठत्रीश ॥ इंद्रजू
 ति आदें देइ गणधर, प्रभुपरिवार जगीश ॥ ज० ॥ ५ ॥
 प्रभु आदि सरवेनें बांदी, मगधाधीश जूपाल ॥ चे
 खणा राणी करे ते गहूली, प्रभुसन्मुख ततकाल ॥
 ॥ ज० ॥ ६ ॥ कुंकुम घाली साथीयो पूरे, अष्ट कर्म
 ने चूरे ॥ चिहुं गति चूरण दुःख निवारण, मनोव
 ठित सवि पूरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ श्रीअचलगद्यपति पूज्य
 पद्मोधर, पुण्यसागर सूरिराया ॥ सूरि ठत्रीश गुणें
 करि शोहे, जवि प्रणमो तस पाया ॥ ज० ॥ ८ ॥
 जखो घंदरे सुंदर श्रावक, गुरुगुणना ठे रागी ॥
 श्रीवीर प्रभुनो पसाय खहीने, गातां शुभमति जा
 गी ॥ ज० ॥ ९ ॥ आपाढ यदि एकमनें दिवसें
 गहूली गाई मनरंगें ॥ चतुरा मखि मुकंठें गाजो,
 जाव धरी उमंगें ॥ ज० ॥ १० ॥ जे सोदागण मळी

जीरे घरण गंध रस फरस रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ५ ॥
 जीरे लोक सकलमय इम जख्यो, जीरे कहे गोतम
 धन्य तुम ज्ञान रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एवा गुरुने
 आगळ गहूंथली, जीरे फतेशिखर अमृतशिव निश्रे
 णी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्तरमी ॥

॥ राग धोल ॥ वेनी संचरतां रे संसारमां रे, वेनी सह
 गुरु धर्मसंजोग ॥ वधावो गहूंथली रे ॥ वेनी सहहणा
 जिनशासननी रे, वेनी पूरण पुण्य संजोग ॥ व० ॥ १ ॥
 वेनी सम संतोष साडी वनी रे, वेनी नवब्रह्म नवरंग
 घाट ॥ व० ॥ वेनी तप जप चोखा ऊजलारे, वेनी सत्यव्र
 त विनय सुपाट ॥ व० ॥ २ ॥ वेनी समकित सोवनथास
 मां रे, वेनी कनक कचोले चंग ॥ व० ॥ वेनी संवर
 करो शुज साथीषो रे, वेनी आणातिलक अजंग ॥
 ॥ व० ॥ ३ ॥ वेनी समिति गुप्ति श्रीफल धरो रे, वे
 नी अनुजव कुंकुम घोल ॥ व० ॥ वेनी नवतत्त्व दृश्
 ये धरो रे, वेनी चरचो चंदन रंग रोल ॥ व० ॥ ४ ॥
 वेनी जवजल जेहमां जेदीयें रे, वेनी विवेक वधा
 वो शाल ॥ व० ॥ वेनी वीर कहे जिन शासने रे,
 वेनी रहेतां मंगलमाल ॥ व० ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ અથ ગઢુંલી અઢારમી ॥

॥ બાહ્યાલોજી વાચે ઠે વાંસલી રે ॥ એ દેશી ॥
 ॥ સોહમસ્વામી સમોસચ્ચા રે, રાજગૃહીભયાન ॥ વહુ
 મુનિ પરિકર સંજુતા રે, ચહનાળી જગવાન ॥ સોહ ॥
 એ આંકળી ॥ ૧ ॥ ગુરુમુલ્લ કમલ વિલોકવા રે, આ
 વે શ્રેણિક માહારાય ॥ જાવ જક્તિ કરી વાંદિયા રે,
 ગણધર કેરા પાય ॥ સો ॥ ૨ ॥ શ્રીગુરુજી દીયે દે
 શના રે, તે સાંજલે શ્રોતાશૃંદ ॥ અમીય સમાળી વા
 ણી સુણી રે, મનમાં પામે આનંદ ॥ સો ॥ ૩ ॥
 વલાણ અવસર જાણીને રે, જ્ઞાનની જક્તિ નિમિત્ત ॥
 સતીય શિરોમણિ ચેલણા રે, સાચીયો પૂરે પવિત્ત ॥
 ॥ સો ॥ ૪ ॥ જ્ઞાન પરમ ગુણજીવને રે, જે તસ
 જક્તિ કરેય ॥ તેદને જ્ઞાનની સંપદા રે, દર્શન એમ
 કહેય ॥ સો ॥ ૫ ॥ ઇતિ ॥ ૧૭ ॥

॥ અથ ગઢુંલી ડંગળીશમી ॥

॥ રાજગૃહી સમોસચ્ચા ॥ ગુરુરાજ રે ॥ સોહમ સ્વા
 મીઆજ ॥ સમારો કાજ રે ॥ સદીયર માંરી વાંદ
 વા ॥ ગુ ॥ આઘો લેઈં વર લાજ ॥ સ ॥ ૧ ॥
 ગુરુઆગલ રવો ગઢુંચલી ॥ ગુ ॥ ડુવિધજાવ વહુ
 જાવિ ॥ સ ॥ અધ્યાત્મ વર થાલમાં ॥ ગુ ॥ ગુ

॥ અથ ગઢૂલી એકવીશમી ॥

॥ ગામ નગર પુર વિચરંતા, ગુરુ શ્યાવે ઠે, મુનિ પંચ
સયા પરિવાર ॥ સાથેં લાવે ઠે ॥ સહસ અઢાર સીલાંગ
ના, જે ધોરી ઠે ॥ બ્રહ્મચર્યના જેદ અઢાર, આપ વિચારી
ઠે ॥ ૧ ॥ જીવજેદ વત્રીશની, દયા જાણી ઠે ॥ નિરુપાધિ
ક દેશના સાર, નાથ વચાણી ઠે ॥ દીક્ષા દોષ નિવાર
વા, નર તારે ઠે ॥ પાપ સ્થાનના દોષ અઢાર, દૂર નિવારે
ઠે ॥ ૨ ॥ રત્નત્રયિ આરાધતા, ગુરુ રાજે ઠે ॥ ગુરુરાજ ગૃહી
ભ્યાન, અધિક દિવાજે ઠે ॥ કનકકમલ વીરાજતા, ગુરુ
ગાજે ઠે ॥ પ્રજુવીર પટોધર ધીર, જાવઠ જાંજે ઠે ॥
॥ ૩ ॥ જંબુ કુમરયુક્તે કરી, ગુરુ, જેઠ્યા ઠે ॥ કહે મુલ્લ
થી મહારા આજ, પાતક મેઢ્યાં ઠે ॥ સમુદ્રસિરી જંબૂ
તણી, પટરાણી ઠે ॥ વલિ વીજી સાતે નાર, ગુણની
ચાણી ઠે ॥ ૪ ॥ પહેરી કરુણા કાંચલી, મન મોતી
ઠે ॥ ઝંઢી સમકિત સાઢી માંહે ગુરુમુલ્લ જોતી ઠે ॥
ધિરતા જાવના થાણમાં, વ્રત મોતી ઠે ॥ જરી કુંકુમ
રાગ કચોલ, પુણ્યપનોતી ઠે ॥ ૫ ॥ શ્રદ્ધાજાવનો સાધિ
યો, ત્યાં પૂરે ઠે ॥ ઠવિ પંચાચાર રતન, ચિહું ગતિચૂરે
ઠે ॥ તે દેહી મોહરાપની, માત જુરે ઠે ॥ ૬ ॥ લેશે શિ
વસુલરાજ, ચઢતે નૂરે ઠે ॥ ૬ ॥ ગઢૂલી કરો ગુરુ

आगलें, मन माचे ठे ॥ हवे जंबु सोहम पास, संजम जा
चे ठे ॥ पांचशें सत्तावीशशुं, व्रत लीधुं ठे ॥ कहे मोह
न माहाराज, फारज सीधुं ठे ॥ ७ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ गहंली घावीशमी ॥

॥ वेनी नरजव पुणें पामी रुथडा रे, शुचि रुचि
करो शणगार रे ॥ वधावो गुरुने मोनीयें रे ॥ वेनी
दर्शन करो आदि देवनुं रे, वेनी वली वली वांदो रे
अणगार रे ॥ व० ॥ १ ॥ वेनी मयगल परें मुनि
मालाता रे. वेनी मधुकर परें लीयें आहार रे ॥ व० ॥
वेनी आतमराम रमे रंगशुं रे. वेनी मृत्र अर्थ नय
जंमार रे ॥ व० ॥ २ ॥ वेनी इस सोहागण परें सा
थियो रे. वेनी गाउं मंगल गीत रे ॥ व० ॥ वेनी
विधिं वधार्वी करो लुगणां रे. वेनी ए जिन शाम
न रीत रे ॥ व० ॥ ३ ॥ वेनी पच्चखाण करो पाय
पुर्जाने रे. वेनी वीरवार्वी पीयो रमाळ रे ॥ व० ॥
वेनी शुरु होये आतमा आयणो रे. वेनी शिवमुख
लहीयें रसाळ रे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ गहंली त्रैवीशमी ॥

॥ विमलगिरि रंगरसें सेवा ॥ ए देर्जी ॥

॥ मुनिवर मारगमां वसिया. वसी उन्मारगथ्री ख

सिया, शिववहू खेलणके रसिया ॥ मु० ॥ १ ॥ वीलुं
 गुणगाणुं घाल, जगवई अंगें सुविशाल, रहे प्रमत्ते
 घणो काल ॥ मु० ॥ २ ॥ अंतर मुहूरत स्थितिआवे,
 निजामां गुण पलटावे, पण अप्रमत्त तणे जावें ॥
 ॥ मु० ॥ ३ ॥ अव्यजाव संजम धरिया, जंगम तीर
 थ संचरिया, पाखरिया सिंदू केसरिया ॥ मु० ॥ ४ ॥
 दुविहासित सहे न लहे, ऊण परिसद्व वीश स
 हे, मुनिवर आचारांग कहे ॥ मु० ॥ ५ ॥ चक्रवाल
 दशविध पाले, चरणकरण गुण अजुआले शून्यदहन
 अवधि टाले ॥ मु० ॥ ६ ॥ एहवा मुनि वरनी आ
 गें, चतुरा अक्षर फल मागे, आविका मुनि गुणरागें
 ॥ मु० ॥ ७ ॥ गहूंली करी निजमल धोती, वधावती
 ऊसके मोती, लली लली गुरु सन्मुख जोती ॥ मु०
 ॥ ८ ॥ आगम रयण गुणें रमती गुरुगुण गाती मन
 गमती, श्रीशुजधीर चरण नमती ॥ मु० ॥ ९ ॥
 ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथनो विवाहसो चौथीशमो ॥
 ॥ पासकुमर महिमा निसो, गुणमणि रयण जंमार ॥
 अक्सर विवाहजिन तणो, गायशुं अति सुखकार ॥
 पा० ॥ १ ॥ शुज मंरुपें तोरण सोदियें रे, जोतां
 सुर नरनां मन सोदियें रे मखीयो रे

ने मासें केसर कीयो रे, चोथे कपूरनी रेख ॥ आ० ॥
 पांचमे इष्ट पूजी जिमो रे, ठठे रह्या गर्जावास
 ॥ आ० ॥ २ ॥ सातमे जाणुं सिंहें चडे रे, आठमे
 दीजें दान ॥ आ० ॥ नवमे मासें यतना करो रे, स
 वानवें पुत्र रतन ॥ आ० ॥ ३ ॥ धरणीयें पग देई
 जनमीया ए, जन्म्या श्रीमाहावीर ॥ आ० ॥ सोना
 ठरीयें नाख वधेरीयां रे, दायीने कोटी सोनैया दीध ॥
 माहावीर कुंवर जन्म्या रे ॥ ए आंकणी ॥ ४ ॥ पुत्र
 जन्म निज सांजली रे, राय सिद्धार्थने हृपे न माय
 ॥ मा० ॥ वधामणीयाने पंचांग पहेरामणी रे, वली
 कीधी खाख पसाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ पाणी साथें दूध
 डे नवरावीया रे, चोखा साथें भोतीडे वधाव ॥ मा० ॥
 चीर फाडीनें घाखोतियां रे, पलंग पालखडीयें पोढा
 व ॥ मा० ॥ ६ ॥ घर घर गूडियो उठले रे, नीलां तो
 रण बांध्यां ठे धार ॥ मा० ॥ वठजीनी फईजी तेडा
 वीयां रे, नाम दीधुं वर्द्धमान ॥ मा० ॥ ७ ॥ मेरु
 शिखर ऊपर छात्र करे रे, ठप्पन कुमरी गावे ठेगीत ॥
 मा० ॥ नाम पडामण हाथीयो रे, दीधां दीधां रत्न
 वे चार ॥ मा० ॥ ८ ॥ सोना ते केरुं छुमणुं रे, मांहे
 ॥ छुमकार ॥ मा० ॥ त्रिशखा राणी पुत्र तुमा

रहो रे, देवतणो शिरदार ॥ मा० ॥ ए ॥ फाग गहुं
 नी लापशी रे, मांहे माखवीयो गोस ॥ मा० ॥ जा
 जे धीरें लसलसी लापशी रे, गोत्रज त्यागल नैवेद्य
 कराय ॥ मा० ॥ १० ॥ कुंवरनी माता एम जणे रे,
 कुंवरजी श्यविचल राज ॥ मा० ॥ सोवन पाखणी
 येपोढाढीया रे, नीखुडां वख्र उंठाड ॥ मा० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली ठवीशमी ॥

॥ सरसति सामीने दिख धरी रे, वांझु गुरुने उत्साह ॥
 कमल पोयण सम लोयणी रे, कामिनी कंचनवान ॥
 चमर ढळावो जिणंद प्रभु वीरने रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
 कंकण नेतर खलकती रे, ललकती कोकिलवान ॥ ग
 जगति चाखशुं चाखती रे, मलपती सहियर साथ ॥
 च० ॥ २ ॥ कनक कचोळां कुंकुम जरी रे, थाल
 मुक्ताफल सार ॥ चरम प्रभुजीनें वांदवा रे, शोल स
 जी शणगार ॥ च० ॥ ३ ॥ ग्रह उगमतानी गहूंथली
 रे, वाजे वीणा सार ॥ चेखणा काटे ठे गहूंथली रे,
 श्रेणिकनी घरनार ॥ च० ॥ ४ ॥ मोतीनो पूख्यो ठे
 साथियो रे, ठवीयां पांच रतन ॥ चेखणा वधावे ठे
 मोतियें रे, देशना दिये जगवन्न ॥ च० ॥ ५ ॥ पाट
 पीठ प्रभु पाउले रे, गाती रंगें रे साज ॥ सोवन सूर

ज ऊगियो रे, सुरतरु मोख्यो रे आज ॥ च० ॥ ६ ॥
 पूर्वज तूवा पुण्यथी रे, वांघ्या वीर जिणंद ॥ सुणी
 देशना जगवंतनी रे, हरख्यां नर नारी वृंद ॥ च०
 ॥ ७ ॥ चेलणा चतुराई चित्तमें रे, संजारे दिवस ने
 रात्र ॥ त्रिशलानंदन देखतां रे, पवित्र थयां मोरां
 गात्र ॥ च० ॥ ८ ॥ सेवक लक्ष्मीसूरि तणो रे, प्र
 णमे नाण उदार ॥ वीर प्रजुजीने वांदतां रे, सफल
 कियो अवतार ॥ च० ॥ ९ ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ पडावश्यकसूत्रनी गहूंली सत्तावीशमी ॥
 ॥ अहो मुनि चारित्रमां रमता, श्रीजिनआणा सुधी
 धरता, क्रियामारगमां अनुसरता ॥ अहो० ॥ १ ॥
 पडावश्यक सूत्रतणी रचना, ते सांजलो जवि एक
 मना, याणी अमृत रस ऊरना ॥ अहो० ॥ २ ॥
 प्रथम सामायिक जे दाख्युं, बीजुं चउविसवो जां
 ख्युं, तृतीय वांदण दिस राख्युं ॥ अहो० ॥ ३ ॥ प्र
 तिक्रमण चोथे सुणतां, काउस्सग्ग पांचमे अनुसर
 तां, छठे पच्चकाण करतां ॥ अहो० ॥ ४ ॥ पड्विध
 आवश्यक जे धारे, शुज परिणामें अवधारे, श्रीजिन
 मारग अजुवाले ॥ अहो० ॥ ५ ॥ स्थापना ज्ञानत
 णी मांनो, ममता माया दूरें ठांनो, तो शमतावृद्ध

होये जागो ॥ अहो० ॥ ६ ॥ इण्णिपरें सोद्दमनी
 वाणी, गहूंली करे चेखणा राणी, गुरु सन्मुख जोवे
 गुणखाणी ॥ अहो० ॥ ७ ॥ सीहोर नगरें गहूंली
 गाइ, कहे मुक्ति सुणो चित्त छाइ, श्रीजिन थाणा
 धरो जाइ ॥ अहो० ॥ ८ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ गहूंली अष्टावीशमी ॥

॥ अरिहा आया रे, चंपावनके मैदान ॥ सुरपति
 गाया रे, शासनके सुखतान ॥ ए आंकाणी ॥ समव
 सरण सुर मली विरचावे, फूल सचित्त जल धलनां
 लावे ॥ विकसित जानु सम वरसावे, उपर बेसे रे,
 मुनिमुख परपदा वार ॥ प्रभु महिमायें रे, पीठा न
 हुवे लगार ॥ तत्त्वावतारी रे, प्रयचन सारउल्लार ॥
 अ० ॥ १ ॥ पुरी शणगारी कोणिक राय, जल ठटकायां
 फूल विठाय, सजी सामईयुं वंदन आय, उववाई सूत्रें
 रे, देशना अमृत धार ॥ गौतम पूठे रे, अंबडनो अधि
 कार ॥ अदत्त न लेवे रे, सात सया परिवार ॥ अ० ॥ २ ॥
 पाणी ठठे तरशां व्रत पाली, गंगा रेवत वच्चें संथा
 री, देवलोके पंचम अवतारी, अंबडनामें रे, ते सह
 नो शिरदार ॥ अवधिहानी रे, वैक्रियलट्ठि उदा
 र ॥ तापस वेशें रे पाले अणुव्रत वार ॥ अ० ॥

॥ ३ ॥ ते गुणदरिया कौतुक जरिया, कंपिलपुरमां
 हे संचरिया, नित्य नित्य सहु घर वसती वरिया,
 सहुको जाणे रे, अम घर उठव थाय ॥ घर घर
 होशे रे, कौतुक जोवा ते जाय ॥ देव जवांतर रे,
 अंबड मुक्ति वराय ॥ अ० ॥ ४ ॥ सांजखी दृष्टे हर्ष ज
 राणी, बहुतसाहेलीनी ठकुराणी, नामें सुजडा धारणी
 राणी, चीर पटोली रे, पहेरी निकट ते जाय ॥ घुंघट
 खोली रे, अंजलि शीश नमाय ॥ केशर घोली रे,
 साथिये मोती पूराय ॥ अ० ॥ ५ ॥ चतुरा चउमुख
 चित्त मिलावे, मुक्ताफल दोय हाथ धरावे, श्रीशुज
 वीरनां चरण वधावे, मंगल गावे रे, रंजा अपठर
 नार ॥ जगतनो दीवो रे, विश्वंजर जयकार ॥ बहु
 चिरंजीवो रे, त्रिशला मात मल्हार ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ अथ गहूंली उंगणत्रीशमी ॥

॥ अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकणी ॥ वीरनी
 आणा शिरधरता, पवयणमायें सुविचरंता, सोहमपा
 ट दीपावंता ॥ अ० ॥ १ ॥ श्रीजिन आणा मती रा
 गी, अव्य जव परिग्रह त्यागी, शिवरमणीशुं लयलागी
 ॥ अ० ॥ २ ॥ ठत्रीश ठत्रीशीयें पूरा, रागादिकथी र
 हे दूरा, शांत मुद्रामांहे ससनूरा ॥ अ० ॥ ३ ॥ वी

રવાણી ચિત્ત અનુસરતા, કુમતિ તણા મદ ગાલંતા,
 આઘ્યા રાજશૃદ્ધી ફરતા ॥ અ૦ ॥ ૪ ॥ કોણિક ચૂ
 પતિની રાણી, જામંમુખમાં ઝજાણી, ધવલ મંગલ
 કરે ગુણલાણી ॥ અ૦ ॥ ૫ ॥ અનુજવ જ્ઞાને ચિત્ત
 ઠરશે, સજ્જુર શૃંગે સદા વરસે, જવિજલધર વાત
 ક વરસે ॥ અ૦ ॥ ૬ ॥ ણી પરે જે ગુરુ ગુણ ગાવે,
 સંવરજાવે ચિત્ત લાવે, મહોદ્રસિંહ સૂરિ સુખ પા
 વે ॥ અ૦ ॥ ૭ ॥ ઇતિ ॥ ૨૯ ॥

॥ અથ ગઢૂંલી ત્રીશમી ॥

॥ સહિ રાજશૃદ્ધી ઉદ્યાનમાં, ઉત્તરિયાશ્રી જિનરાજ ॥
 વારી જાઝંઘીરને ॥ સહિ મનનો તે સાંસો ઉપશમે,
 જાણીયે મલીયો ઠે શિવપુરીનો સાજ ॥ વા૦ ॥ ૧ ॥
 સહિ દેવઠંદો તેદેવે રચ્યો, તિહાં વેઠા ઠે ત્રિજુવન રા
 થ ॥ વા૦ ॥ સહિ ઘારે પર્પદા તિહાં મલી, જીરે સ
 તી સુણવાને જાય ॥ વા૦ ॥ ૨ ॥ રાણી ચેલણા
 તે લાવે ગઢૂંથલી, રાજા શ્રેણિકની ઘરનાર ॥ વા૦ ॥
 જીરે મુક્તા તે ફલનો સાથિયો, જીરે ઉપર શ્રીફલ
 સાર ॥ વા૦ ॥ ૩ ॥ સહિ ઠવણીની આગલ ગઢૂંથલી,
 જીરે વિચ વિચ નાગરવેલ ॥ વા૦ ॥ જીરે દર જહું રે
 દરિયા તણું, જીરે જેમાં ઠે જાજેરી રેલ ॥ વા૦ ॥

॥ ४ ॥ जीरे वखाण जखुं रे धीरजी तणुं, जीरे सां
जखे गुणिजन लाख ॥ वा० ॥ जीरे नानी ते नानी
नानडी, जीरे नानी ठे शाकर डाख ॥ वा० ॥

॥ ५ ॥ जीरे नानी ते प्रजुजीनी जीजडी, जीरे बूज
व्या जाण अजाण ॥ वा० ॥ जीरे चाट जणे रे वी
रुदावखि, जीरे सईयर गावे गान ॥ वा० ॥ ६ ॥
जीरे आ जुगमां जोतां थकां, जीरे कोई न करे प्रजु
जीशुं होड ॥ वा० ॥ जीरे जव जव ए जिन जोमखे,
वसंतसागर कहे कर जोड ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गिरनारजीनो वधावो एकत्रीशमो ॥

॥ प्रथम रेवतगिरि पेखियो, जीहो उपनो अधिक आ
णंद ॥ वधावो मारे आवीयो ॥ बीजे नेमीशर बहु
गुणा, जीहो दीगो दोखतनो दिणंद ॥ व० ॥ १ ॥

॥ ए आंकणी ॥ बीजे वधावे प्रजु तुं स्तव्यो, जीहो
अगर सुवासि विहार ॥ व० ॥ केसर चंदन कुसुम
नी, जीहो पूजा सत्तर प्रकार ॥ व० ॥ २ ॥ चोये

॥ प्रजु चरणनुं, जीहो धरीयें मन शुज ध्यान

॥ चतुर दरिस्सण चारित्रनां, जीहो गुण गाठं

॥ व० ॥ ३ ॥ आसन युक्ति अनुसरी,

॥ जादव गुणसय सीन ॥ व० ॥ जातुं प्रजुगु

1

2

3

4

5

6

जीरे मारे धन्य जहा प्रमुख, साते वेहेनो सोहामणी॥
 जीरे० ॥ जीरे मारे सूरेश्वर शिरदार, श्रीधूखिज्ज शि
 रोमणि ॥ जीरे० ॥ ६ ॥ जीरे मारे ध्यान धरो दिन
 रात, एवा मुनिनुं खांतशुं ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे लेशे
 मंगलमाख, जे गावे नित्य जावशुं ॥ जीरे० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ पजूसणनी गहूंली तेत्रीशमी ॥

॥ महारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ परब पजूसण पुण्यने योगें, मलिया सह गुरु सं
 योगें रे ॥ मारी सही रे समाणी ॥ सात पांच जेली
 मलीनें टोली, गहूंली करे मन जोली रे ॥ मा० ॥ १ ॥
 धुंघटपट खोली गुरुमुख जोती, तन मनना मल
 धोती रे ॥ मा० ॥ समकितरागें ने धर्मनी बुद्धि, परि
 णतिनी वाली शुद्धि रे ॥ मा० ॥ २ ॥ वांदी वधावी
 गुरुजीनी वाणी, निसुणो जविजन प्राणी रे ॥ मा० ॥
 उपशम जावो ने निंदा निवारो, जीव सहशुं हित धारो
 रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ गुरुपग मूढे संघ सह खामो, क
 मद वामो रे ॥ मा० ॥ इणदिन आवे व्रत
 तप कीजें, अधिक अधिक लाहो लीजें रे ॥
 मा० ॥ ४ ॥ पूजा प्रजावना महिमाने देखी, हरखे
 धरमना गवेपी रे ॥ मा० ॥ चैत्य परवाडी जिनमुख

जोवो, जवजवनां पाप खोवो रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ कल
 ५ सुणीजें प्रजावना दीजें, अछाड महिमा इम कीजें
 रे ॥ मा० ॥ गहूंली गावो ने वीरजिन ध्यावो, मळूक
 जावना जावो रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ अथ चूनडी चोत्रीशमी ॥

॥ आठी सुरंगी चूनडी रे, चूनडी राती चोख रे ॥ रं
 गीली ॥ छाल सुरंगी चूनडी रे ॥ १ ॥ बुरान पुरनी
 बांधणी रे, रंगाणी ठरंगावाद रे ॥ रंगीली ॥ चोख
 मजीठना रंगथी, कसुंवे लीधो हठवाद रे ॥ रंगीली
 ॥ आ० ॥ २ ॥ सूरत शहेरमां संचख्यां रे, जातां जिन
 वाणीनें माट रे ॥ रंगीली ॥ चोराशी चोकने चहूवटे
 रे, दीठां दोशीडानां हाट रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ३ ॥
 नणदी वीराजीने वीनवे रे, ए चूनडीनी होंश रे ॥
 रंगीली ॥ चूनडीमां हाथी घोडला रे, हंस पोपट ने
 मोर रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ४ ॥ समरथ ससरे मू
 खवी रे, पासें पीयुजीने राख रे ॥ रंगीली ॥ समकित
 सामुना केणथी रे, सोनझ्या दीधा सवा छाल रे ॥
 रंगीली ॥ आ० ॥ ५ ॥ सासूजीने साडीयो रे, ना
 नी नणदीनें घाट रे ॥ रंगीली ॥ देराणी जेठाणीनां
 जोडलां रे, शोक्यने लावो शा माट रे ॥ रंगीली ॥

आ० ॥ ६ ॥ चूनडी उढिनैं संचख्यां रे, जातां जिनद
 रंवार रे ॥ रंगीली माणकमुनियें कोडथी रे, गाई
 ए चूनडी सार रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति० ॥ ३४ ॥

॥ अथ गहूंली पांत्रिशमी ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रिगुरुपद पंकजनी सेवा, लागी ठे मुऊ मन
 हेवा रे ॥ गुरुजी उपकारी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु गु
 ए दरीयो सुपरें जरियो, मुऊथी किम जाये तरियो
 रे ॥ गु० ॥ १ ॥ पांच ज्ञानमांहे उपकारी, ए श्रुतनी
 वलिहारी रे ॥ गु० ॥ असंख्य जीवना जव सुविला
 सें, संख्याता जव प्रकासे रे ॥ गु० ॥ २ ॥ लोकना
 जाव ते ज्ञानथी कहीयें, सजुरु मुखथी लहीयें रे
 ॥ गु० ॥ दर्शन सहित ज्ञान ते जासे, दर्शन मोहनी
 नासे रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ विघटे मिथ्यात्व आत्म
 केरो, टाले ते जवनो फेरो रे ॥ गु० ॥ समकितवि
 ण संजम नहिं रचना, आगम मांहे ठे वचना रे
 ॥ गु० ॥ ४ ॥ समकित सहित करे जे किरिया, ते
 जवसमुझथी तरिया रे ॥ गु० ॥ एहवी वाणी सोह
 म केरी, नासे कर्मजो बैरी रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ सोह
 म पाट परंपर राजे, विजयदेवेंद्र सूरि गाजे रे ॥ गु० ॥

स्वस्तिक पूरे दुःखने चूरे, वधावे चढते नूरें रे
 ॥ गु० ॥ ६ ॥ सूरि गुणे ठत्रीश सोहावे, विजयानं
 द पद पावे रे ॥ गु० ॥ प्रेमयी जावे नवनिध पावे,
 अमृत शिव सुख प्यावे रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥३५॥

॥ अथ गढूंली ठत्रीशमी ॥

॥ मोतीवाळा नमरजी ॥ ए देशी ॥

॥ चरणकरणशुं शोजता ॥ धतधारी रे सुगुरु जी ॥
 जविजन मानस हंस रे ॥ जगत उपकारी रे सुगुरुजी
 ॥ जंगमतीरथ साधु जी ॥ ब्र० ॥ छोज तणो नहिं
 अंश रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिरूवादिक गुण जख्या,
 ॥ ब्र० ॥ पटकारण लिये आहार रे ॥ ज० ॥ सामु
 दाणी गोचरी ॥ ब्र० ॥ ज्ञानरतन जंगार रे ॥ ज०
 ॥ २ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ ब्र० ॥ वनिता धरि
 य विवेक रे ॥ ज० ॥ सरखी साहेलियें परवरी
 ॥ ब्र० ॥ समकितनी घणी टेक रे ॥ ज० ॥ ३ ॥
 अस्तिक पीठनी उपरें ॥ ब्र० ॥ अनुभव मुक्ता श्वेत रे
 ॥ ज० ॥ चिहुं गति चूरण साथीयो ॥ ब्र० ॥ वधा
 वती धरी हेत रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ गुणवंती गावे गढूंअ
 ली ॥ ब्र० ॥ मुनिगुणमणि धरि हाथ रे ॥ ज० ॥

श्रीगुजवीरनी देशना ॥ प्र० ॥ सुणतां मखे शिवसा
य रे ॥ ज० ॥ ए ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ गहुंली साडत्रीशमी ॥

॥ केसरिया चढो वरघोडे ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही घनखंरु विचाल, आव्या वीरजिणंद द
याल, वंदे श्रेणिकनामं चूपाल तो ॥ वीर जगतगुरु
वंदना करियें ॥ वंदना करियें ने जवजल तरियें तो
॥ वी० ॥ १ ॥ कुष्टि कुरूप एक देव ते वार, मरण
जीवन जन चार विचार, श्रेणिकरायने हर्ष अपार तो
॥ वी० ॥ २ ॥ कोसंधी नगरीनो वासी, सेडूक ब्रा
ह्मण धननो आशी, पुत्र कुटुंबने रोगें वासी तो ॥
वी० ॥ ३ ॥ आवे राजगृही डुवार, मरण खही
जल तरश अपार, जलमां केडकनो अवतार तो
॥ वी० ॥ ४ ॥ वारी हारी नारि वचनथी, पूर
वज्रव खहि चाढ्यो वनथी, मुज वंदन हरख्यो तन
मनथी तो ॥ वी० ॥ ५ ॥ तुज घोटक पद हणि
यो जाम, खहि सुर जव आव्यो एणें ठाम, श्रेणिक
देखे तुज परिणाम तो ॥ वी० ॥ ६ ॥ मोक्षगमन
कहो मुजने सार, दर्दूर रंक तणो अधिकार, उप
देशमाला ग्रंथ मोजार तो ॥ वी० ॥ ७ ॥ राणी

चेलणा हपे न मावे, मुक्ताफलशुं गहूली घनावे, श्री
 शुजवीर जिणंद वधावे तो ॥ जी० ॥ ७ ॥ ३९ ॥
 ॥ अथ गहूली आढत्रीशमी ॥
 ॥ छारका नगरी दीपती ॥ जिन बंदीयें ॥ वसे जादव
 कुलनो परिवार ॥ रे जिन बंदीयें ॥ जिनजी ते आवी
 समोसखा ॥ जि० ॥ साथें गणधर वर अढार ॥
 रे जि० ॥ १ ॥ अढार सहस साधु जला ॥ जि० ॥ ते
 तो खन्धि तणा रे झंकार ॥ रे जि० ॥ समवसरण
 दवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां वेठी पपदा वार ॥ रे जि० ॥
 ॥ २ ॥ कृष्णजी बांदवा आविया ॥ जि० ॥ साथें थंते
 उरनो परिवार ॥ रे जि० ॥ गहूली ते करे मन रंग
 शुं ॥ जि० ॥ सत्यजामा रुक्मिणी नार ॥ रे जि० ॥
 ॥ ३ ॥ पहेरी पटोलां दाडमी ॥ जि० ॥ पाये कांऊरनो ज
 मकार ॥ रे जि० ॥ मुक्ताफलनो साथीयो ॥ जि० ॥
 पांच रतन ते पंचाचार ॥ रे जि० ॥ ४ ॥ खली खली
 खेती लूवणां ॥ जि० ॥ जिनमुखडां जूवे रे निहाल
 ॥ रे जि० ॥ कृष्णजीयें प्रभुजीने पूठियुं ॥ जि० ॥
 मुज श्रम चढ्यो रे थपार ॥ रे जि० ॥ ५ ॥ प्रभुजी
 कहे श्रम उत्तख्यो ॥ जि० ॥ तमें कारज कखुं मनो
 हार ॥ रे जि० ॥ सातमीनी व्रीजी करी ॥ जि० ॥

तमें समकित नमो निर्धार ॥ रेजि० ॥ ६ ॥ रोम रोम
 हर्षित हुआ ॥ जि० ॥ प्रभु तार तार मुक्त तार
 ॥ रेजि० ॥ न्यायसागर प्रभु नीरखतां ॥ जि० ॥ तमे
 जय जय जणो नर नार ॥ रेजि० ॥ ७ ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ अथ गहूंखी उंगणचालीशमी ॥

॥ आर्यदेश नरजव लहो रे, श्रावक कुल मनोहार
 रे ॥ जिननी वाणी नित्य सुणे रे, धन्य तेहनो अवतार
 ॥ गुरुने बोलडीये, मोह्या मोह्या रे त्रिचुवन लोक ॥ गु
 रुने बोलडीये, ॥ १ ॥ उठी सवारें प्रभु नमे रे करे
 नवकारसी सार रे ॥ शोल शणगार सर्जी करीने,
 आवे गुरु दरवार ॥ गु० ॥ २ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ
 करीने, बांदी वैसे ठाय रे ॥ उठ हाथ अलर्गी रहिनं,
 गहूंखी पूरवा जाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ चिहुंगति दुःख
 निवारवा रे, माहामंगल उच्चार रे ॥ आठ मंगल
 गांहे बडो ने, सार्थीयो कीजें उदार ॥ गु० ॥ ४ ॥ व
 ळये गुरुरायने रे, पठें करे पञ्चास्काण रे ॥ लूठणीयां
 लटके करे ने, जाव जसो मन थाण ॥ गु० ॥ ५ ॥
 आगम अर्थने धारती रे, करनी विनय विशेप रे ॥
 एम आतमने तारती रे, सोजाग्यलक्ष्मी सुविशेप ॥
 ॥ गु० ॥ ६ ॥ इती ॥ ३८ ॥

(४९)

॥ अथ गहूंखी चालीशमी ॥

॥ रूमी रे राजगृही उद्यानें, पंचसया मुनिमान हो
॥ स्वामि ॥ आबीया गुरु गोयम स्वामी ॥ यनपालें जई
राय बधाव्या, हृपे बधामणी लाया हो ॥ स्वा० ॥
॥ आ० ॥ १ ॥ आव्या वीरतणा आदेशी, कइयें
केवा केशी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक अंतेउर
सहु तेडी, जीत नगरां नेडी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥
॥ २ ॥ चेडा रायतणी तस वेटी, चेखणा गुणमणि
पेटी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक रायतणि पट
राणी, वीरें आप बखानी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ३ ॥
साथीयडो कीधो खटकाखो, मंगल रंग रसाख हो ॥ स्वा०
॥ आ० ॥ छवि छवि गुरुजीने लूठणां करती, की
र्तिनां दानज देती हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ देशना
सांजखी आनंद पामी, धर्म ययोचिन राग्यां हो ॥
स्वा० ॥ आ० ॥ उपगारी गुरुना गुण गानी, समकिन
रतनने चढ़ानी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ श्री
पासतणीपरें तगने, शिव रमणी मुख बरसे हो ॥
स्वा० ॥ आ० ॥ जे कोई गहूंखी एणी परें करशे, मुक्ति
ताणां मुख बरसे हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंखी एकनालीशमी ॥

॥ मोक्षम नामी परंपरा ॥ सुखकारी रे साहेब जी ॥
 मुनिगुणरत्न जंगार रे । बाखो मारो एही रे साहेब
 जी ॥ सूरि त्रिंश गुणें शोचता ॥ सु० ॥ धरता माछ
 प्रत सार रे ॥ बाखो ० ॥ १ ॥ पंचेंद्रिय संवरणो ॥ सु० ॥
 नवविध ब्रह्मचर्ये धार रे ॥ बा० ॥ पंगानारज पा
 खता ॥ सु० ॥ दासे कोधादिक चार रे ॥ बा० ॥ २ ॥
 समिति गुमि निजगुह्यता ॥ सु० ॥ पटकायिकप्रति
 पात्र रे ॥ बा० ॥ एह्या गुरुपद सेवीये ॥ सु० ॥
 पामीये मंगलमात्र रे ॥ बा० ॥ ३ ॥ विहार करेना
 श्याबीया ॥ सु० ॥ मुंघदे वेदर मज्जार रे ॥ बा० ॥
 मंत्र सकल अति नावगुं ॥ सु० ॥ गंगा करे नर नार
 रे ॥ बा० ॥ ४ ॥ अचल गच्छति दीपता ॥ सु० ॥
 रत्ननागर सूरिसंग रे ॥ बा० ॥ प्रेमचंद कहें प्रणम
 नां ० सु० ॥ मंचने कल्याण आय रे ॥ बा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ गहूंखी षट्पत्नीशमी ॥

॥ आवा इति सामरिया वाखा ॥ ६ ॥ देवी ॥
 ॥ वाखा मनि बंदनने जइये, बंदीने वावन मो बइये
 ॥ बा० ० ॥ ६ ॥ आकर्षी ॥ नावा विनयाना नावा,
 धने सुरेश्वर कहेंवाया, गुणगीष्ट वनमहि आया

॥ ચાલો ॥ ૧ ॥ શોજા શી વરણવું ધદેની, ત્રિનુવ
નમાં પીર્સિ જેદની, ઘણિદારી જાઝું હું પદની ॥

॥ ચાલો ॥ ૨ ॥ ઠાજે કેવલ ઠકુરાઈ, સાદિ થનંત
ગુણ પાઠ, ગણધર આગમમાં ગાઈ ॥ ચાલો ॥ ૩ ॥

સુરકોડી સેવા કરતા, ભંગળીશ થતિશય અનુસરતા,
જાવે જવસાયર તરતા ॥ ચાલો ॥ ૪ ॥ ચાંદ

દજાર મુનિ સંગે, ધારક ચરણ કરણ રંગે, શીલ સ
શાદ ધસ્યાં થંગે ॥ ચાલો ॥ ૫ ॥ ધ્રેણિક વેલ

ણા સદુ થાવે. મુક્તાફલ જરીને લાવે. મંગલ થાવ
કરી ગાવે ॥ ચાલો ॥ ૬ ॥ ગાતાં ડુઃખ દોદુગ

જાંજે, મંગલ મહિમંગલ કાજે, હમ કહ્યો દીર ક
વિરાજે ॥ ચાલો ॥ ૭ ॥ હતિ ॥ ૪૨ ॥

॥ અથ ગઢંલી ગ્રંતાલીશમી ॥

॥ વાઢીના જમરા, ડાઘ મિઠી રે ઘાંપાનેગ્ની ॥ દેશી ॥

॥ જીરે કામની કહે સુણો કંથ જી, જીરે પાણિયા
મનોરથ થાજ રે ॥ નણવીના પ્રીત ગણધર આઘવા

ઠે ચાલો વાંદવા ॥ જીરે જશોદધિ પાર ઠનાઘવા જીર
તારણ તરણ જહાર રે ॥ નં ॥ ૧ ॥ જીરે ગળેશક

ચલ્ય સમોસચ્ચા, જીરે કીરતણા ઠે પટોધાર ર ॥ નં ॥ ૨ ॥
જીરે પાંચશે મુનિ પરિવાર ઠે, જીરે તારણ

र रे ॥ न० ॥ २ ॥ जीरे कंचन कामिनी परिहृयां,
 जीरे प्रगट्या ठे गुण वीतराग रे ॥ न० ॥ जीरे परि
 सहनी फोजने जीतवा, जीरे कर धरी उपशमखड्ग
 रे ॥ न० ॥ ३ ॥ जीरे प्रवचन मातने पाखता, जीरे समि
 ति गुप्ति धरनार रे ॥ न० ॥ जीरे मेरुगिरि सम
 मोटका, जीरे पंचमहाव्रत चार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ जी
 रे सुरपति नरपति जेहने, जीरे दोय कर जोडी हजूर
 रे ॥ न० ॥ जीरे श्रमृतसमी गुरुनी देशना, जीरे पा
 प पमल होये दूर रे ॥ न० ॥ ५ ॥ जीरे कामिनी व
 थण रे भीठडां, जीरे वांधा ठे गुरु गणधार रे ॥ न० ॥
 जीरे गुरुमुखयी सुणी देशणा, जीरे आनंद अंग अ
 पार रे ॥ न० ॥ ६ ॥ जीरे मुक्ता ने रयणें वधावती, जी
 रे गहूंली चित्त रसाख रे ॥ न० ॥ जीरे निजजब सुकृत
 संचारती, जीरे जेहना ठे जाव विशाल रे ॥ न० ॥
 ॥ ७ ॥ जीरे दीपविजय कविराज जी, जीरे पृथ्वीनं
 दन वलिहार रे ॥ न० ॥ जीरे गौतम गणधर पूज्य
 जी, जीरे वीरशासन शणमार रे ॥ न० ॥ ८ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ गहूंली चुम्मालीशमी ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सुरिजन विचरंता वसुधा तलें, राजगृही उद्यान

— — — — —
— — — — —

मिथन कीनें उंची एम सागरि, शासन जकि विशा
 न है, अज्ञदेसी देसी ॥ मुरिजन प्रनुनी वाणी अमृत
 सागो जग, रंगे सुणीयें रसास है, अज्ञवेसी देसी
 ॥ मुनि० ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥ थाय गहंसी पीस्तासीशमी ॥

॥ सुण गोपात्रणी, गोखटावाली रेवनी रहेने पदेशी
 ॥ सुण गाहंसी, जंगम तीरथ जोवा उनी रहेने ।
 मुनि मुख जोतां, मन उलमे तन विकसे थापण बे
 ने ॥ ए थांकणी वे ॥ थावर तीरथ दुर्गति शारे, प
 ण घर मंसी जइयें ज्पारे, विधियोगे ध्यान धरे त्या
 रे, संसार समुद्रयकी नारे ॥ सुण० ॥ १ ॥ जंगम
 मुनि मारगमां फरता, संयम थाचरणा थाचरता,
 जगजीव उपर करुणा धरता, पुण्यशाली घर पावन
 करता ॥ सुण० ॥ २ ॥ अनाचीरण वावन परिहर
 ता, थांसे दशवैकासिक करता, गणि पेटी बहु श्रुत
 नी धरता, मुखचंद्रयकी अमृत ऊरता ॥ सुण० ॥
 ॥ ३ ॥ वर ज्ञान ध्यानहय गय वरिया, तप जप च
 रणादिक परिकिरिया, विरति पटराणीशुं ठरीया, मु
 निराज सदाइ केशरीया ॥ सुण० ॥ ४ ॥ सुविहित
 गीतारथ गुरु थागे, विधियोगे वंदे गुणरागे, कर

कंकण पग जांजर वागे, गहूंली करतां अनुजव जा
 गे ॥ सुण० ॥ ५ ॥ कुंकावटीयें केशर लेती, करी स्व
 स्तिक पातकडां धोती, बधावती लज्जबल मोती, बल
 ती खलती गुरुमुख जोती ॥ सुण० ॥ ६ ॥ कलकंठ
 वती मधुरा रावे, गुणवंती तिह्नां गहूंली गावे, आ जव
 सौभाग्यपणुं पावे, शुजवीर वचन ह्यडे जावे ॥ सुरे ॥ ७
 ॥ अथ अगीयार गणधरनी गहूंली वेंतालीशमी ॥

॥ जनक रायने रे मांमवे ॥ ए देशी ॥

॥ पहेलो गोयम गणधरु, इंद्रचूति जेहनुं ठे नाम ॥
 अग्निचूति वखाणीयें, बीजो प्रजुगुण धाम ॥ गणधर
 शोना हुं शी कहुं ॥ एथांकणी ॥ १ ॥ वायुचूति त्रीजा
 बजीर ठे, गौतमगोत्र जगवंत ॥ चोथा व्यक्तजी जाणीयें,
 कीधा जवना रे अंत ॥ गण० ॥ २ ॥ स्वामी सुध
 र्मा ठे पांचमा, मंजित ठठा गणधार ॥ मोरिय पुत्र
 ठे सातमा, सह्यु ए जगना आधार ॥ गण० ॥ ३ ॥
 अकंपितजी ठे रे आठमा, अचलजी नवमा रे जाण ॥
 मेतारय जग पूज्य जी, गणपति दशमो वखाण
 ॥ गण० ॥ ४ ॥ स्वामी प्रजासजी वंदीयें, एकादश
 मा गणधार ॥ गणधर गणपति गणपति, तीरथ
 ना अवतार, द्वादशांगी धरनार, सह्यु मुनिना

शिरदार, पाम्या जवनो रे पार, नामें जय जयकार,
 बंदो घार हजार ॥ गण० ॥ ५ ॥ आणा लेइ प्रभु
 धीरनी, सहजजनने सुखदाय ॥ गुणशीला चैत्य पद्मा
 रीया, श्रेणिकवंदन आय ॥ अमृतवाणी सवाय,
 निसुणी हर्ष न माय, सुणतां मनडां खोजाय
 ॥ गण० ॥ ६ ॥ चेलणा पूरे रे गहूंअली, सह्यीयर
 गावे ठे गीत ॥ दीपविजय कविराजनी, ए जिनशास
 न रीत ॥ गण० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ गहूंली सुडतालीशमी ॥

॥ गछ राया रे ॥ ए देशी ॥

॥ चित्त समरुं सरसति माय रे, बली बंदूं सजुरु पा
 य रे, हुंतो गाइश तपगछ राय रे ॥ गछ राया रे
 ॥ १ ॥ ठत्रीश गुणें गुरु राजे रे, गौतम गणधर पट
 ठाजे रे, गुरु पंचाचार दीवाजे रे ॥ गरे ॥ २ ॥ गु
 रु सारण वारण दाता रे, जिनराज सदा मन ध्याता
 रे, गुरु संयम धर्ममें राता रे ॥ गरे ॥ ३ ॥ गुरु
 पंच महाव्रत पाले रे, गुरु आतम तत्व संजाले रे,
 गुरु जिनशासन अजुआले रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ जेणे
 दृष्टि निहाली रे, गुरु देशनादेखटकाळी रे,
 गुरु प्रतपे कोडि दीवाली रे ॥ ग० ॥ ५ ॥ गुरु मधु

द्वारा गुरुजीनी जाख ॥ म० ॥ ११ ॥ जीरे एकचित्त
 जे सांजले, जीरे पामे ते जवपार ॥ म० ॥ जीरे नित्य
 नित्य रंग वधामणां, जीरे सुख पामे संसार ॥ म० ॥
 ॥ १२ ॥ जीरे हीररतन सूरि राजीया, जीरे तपगछ
 केरा राउ ॥ म० ॥ जीरे अमें अमारा गुरुजीने गा
 यशुं, जीरे न गमे ते उठीने जाउ ॥ म० ॥ १३ ॥
 जीरे दानशीयल तप जावना, जीरे जे सुणे ए जि
 नवाणी ॥ म० ॥ जीरे उदयरतन मुनि एम कहे, जीरे
 ते लहे कोडि कल्याण ॥ म० ॥ १४ ॥ इति गहूंली ॥४॥

॥ अथ गहूंली पच्चासमी ॥ गरवानी देशी ॥

॥ वेनी राजगृही उद्यान के, वीर प्रभु आविया रे लोल
 के ॥ वेनी समवसरण मंराण, रचे सुरवर तिहां रे
 लोल ॥ वेनी चार निकायना देव, मली तिहां आ
 विया रे लोल ॥ वेनी परखदा वेठी वार, सुणे प्रभु
 देशना रे लोल ॥ १ ॥ वेनी सोहम गणधर मुनि
 राय के, नर नारी मली रे लोल ॥ वेनी चौद सहस
 परिवार के, आवी परवस्या रे लोल ॥ वेनी श्रेणिक
 राय प्रमुख, बंदन मन जावियां रे लोल ॥ वेनी
 राणी चेलणा नार, जरि थाल वधावीया रे लोल ॥२॥
 वेनी गुरुमुख जोती सार के, मनमां गह गहे रे

वियण कर जोड़, करी एक वीनतिरे खोल के ॥ बेनी
 चंद्रोदयरत्नमूरिंदने, नित्य नित्य वंदनी रे खोल ॥ १ ॥
 ॥ अथ गह्वंरी एकावनमी ॥ गह्वानी देशीमां ॥
 ॥ बेनी गुरु गह्वपति गुरुराज के, गोमम जाणीयें रे
 खोल ॥ बेनी मुनि मंरुल मद्भागज के, मनघर था
 णीयें रे ॥ खोल ॥ २ ॥ बेनी गामनना मुखनान, व
 जीर श्री वीरना रे ॥ खोल ॥ बेनी खड्गिचवंत निधान,
 के श्रीगुण वीरना रे ॥ खोल ॥ ३ ॥ बेनी मगभदेश
 मकार के, गोवरगाम रे रे ॥ खोल ॥ बेनी रमुनूति
 पृथिवी नार के, माता नाम रे रे ॥ खोल ॥ ४ ॥ बे
 नी सावन वान समान, शरीर सकामय रे ॥ खोल ॥
 बेनी सांचन युगल प्रधान के, कर कम काम ॥ रे
 ॥ खोल ॥ ५ ॥ बेनी ज्ञान रयण नकार मदानना
 सागर रे ॥ खोल ॥ बेनी माहाप्रम जग मनाहार
 महिमा गुणआगर रे ॥ खोल ॥ ६ ॥ वन नदी
 प्रतिबंध बिहार, नहीं बंटा कहां रे ॥ खोल ॥ बेनी
 सकल जंतुहिनकार, दया जम मन धर्मी रे ॥ खोल
 ॥ ७ ॥ बेनी नयरी नया उरवत के, गुण्य पधारिया
 रे ॥ खोल ॥ बेनी धेणिकमुत धनधन्य के, वंदन
 पधारिया रे ॥ ३ ॥ बेनी देनना दीयें गुरु

राय, जविक प्रतिबोधता रे ॥ खो० ॥ वेनी प्रह
 छठी प्रणमुं पाय, समिति पंच शोधता रे ॥ खो० ॥
 ॥७॥ वेनी कोणिक जूपति नार के, गहूंली लावती
 रे ॥खो०॥ वेनी स्वस्तिक पूरति खास के, मोतीयें व
 धावती रे ॥ खो० ॥ ॥८॥ वेनी कामिनी कोकिलवाणि
 के, गुरुगुण गावती रे ॥खो०॥ वेनी सौजाग्य सधनी
 सुखखाण, के, सदा सुख पावती रे ॥ खो० ॥ वेनी गुरु
 गणपति गुरुराज के, गोतम जाणीयें रे खो० ॥ १०॥

॥ अथ गहूंली घावनमी ॥

॥गरधानी देशीवेनी थपापा नयरी लथान के, राजां वा
 गियां रे खोल॥वेनी देववाजिंत्र थनेक के, घनाघन गा
 जीयां रे खोल॥१॥वेनी इंद्रजूत्यादि थग्यार के, ब्राह्म
 ण दीपता रे खोल ॥वेनी वेदवादना जाण के, बहु वा
 द जीपता रे खोल ॥२॥ वेनी संशय ठे थति गूढ,
 मिथ्यामति पूरिया रे खोल ॥ वेनी श्रीजिन थमृत
 चाणी के, सुणि सुख पामीया रे खोल ॥ ३ ॥वेनी
 ठांमी सकल जंजाळ के, हुवा घत जाविया रे खोल॥
 वेनी इंद्र सजानो थाळ, केवा जश थाविया रे खोल
 ॥४॥ वेनी थरिद्धा ए थाचार के, तीरथ स्थापिया
 रे खोल ॥ वेनी लावो गहूंली गेल के, हरखें वधा

विया रे लोल ॥ ५ ॥ वेनी वधावो श्री जिनराज,
 करो नित्य नामणां रे लोल ॥ वेनी गाउ मंगल गी
 त के, लीजें वारणां रे लोल ॥ ६ ॥ वेनी बांधो तोरण
 वार के, सुरतरु मालिका रे लोल ॥ वेनी गाउ
 मंगलगीत के, मली बहु वालिका रे लोल ॥ ७ ॥ वेनी
 गौतम केवलज्ञान के, सोहम गद्यधणी रे लोल ॥
 वेनी आपी जंबूने पाट के, पहोता शिवमणि रे
 लोल ॥ ८ ॥ वेनी करतां एहनं ध्यान के, लहीयें
 जश घणा रे लोल ॥ वेनी विबुध कहें श्रीवीरने,
 सहु जय जय जणो रे लोल ॥ ९ ॥ इति ॥ ५२ ॥

॥ अथ गहूंली त्रेपनमी ॥

॥ मुनि पंचम गणधर वीरना रे ॥ मुनि वंदीयें ॥ साथें
 पांचशें मुनि गुणधाम रे ॥ गुरु वंदीयें ॥ राजगृही
 उद्यानमां रे ॥ मु० ॥ गुरु समयसख्या शुभ नाम रे
 ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच माहाव्रत पालता रे ॥ मु० ॥
 दशविध संयतिनो धर्म रे ॥ गु० ॥ संयम सत्तर प्रका
 रधी रे ॥ मु० ॥ लही पावे तेहनो मर्म रे ॥ गु० ॥
 ॥ २ ॥ दश प्रकार विनय जलो रे ॥ मु० ॥ ब्रह्मचर्य
 नववाडें युक्त रे ॥ गु० ॥ रत्नत्रयि आराधता रे ॥ मु० ॥
 वार जेदें तपमां रत्त रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया

खोजने रे ॥ मु० ॥ जीपता करे उग्र विहार रे ॥ गु० ॥
 चरणसित्तरी पाखता रे ॥ मु० ॥ तिम करणसित्तरी
 सार रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ घंदनहेतें आधिया रे ॥ मु० ॥
 राय श्रेणिक बहु परिवार रे ॥ गु० ॥ चेखणा छावे
 गहूंथली रे ॥ मु० ॥ घाट शीख पहेरी मनोहार रे
 ॥ गु० ॥ ५ ॥ आनूपण सत्यवचननारे ॥ मु० ॥ करे
 स्वस्तिक विनय प्रधान रे ॥ गु० ॥ श्रद्धा श्रद्धत था
 पती रे ॥ मु० ॥ करे सूठणां सुप्रणीधान रे ॥ गु० ॥
 ॥ ६ ॥ देशना सांजखे हर्पेशुं रे ॥ मु० ॥ कहे धन धन
 तुम गुरुज्ञान रे ॥ गु० ॥ उत्तम गुरुपद पद्मनी रे ॥ मु० ॥
 सेवा करतां खदे शिवनाथ रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ ५३ ॥

॥ अथ गुरु आगख गहूंसी घोपनमी ॥

॥ तमें पीतांबर पेख्यां जी, मुखने मरकखडे ॥ ए देशी ॥
 ॥ चेखणा छावे गहूंसी ॥ गुरु ए रुडा ॥ श्रेणिक नृप
 घरनार ॥ सजनी ए रुडा ॥ सोदम स्वामी समोस
 ॥ गु० ॥ प्रभु पंचम गणधार ॥ स० ॥ १ ॥ ठ
 प्रीश ठप्रीशी गुणें ॥ गु० ॥ शोजित पुण्य पवित्त
 ॥ स० ॥ आगमवयण सुधारसें ॥ गु० ॥ वरशी ठारे
 चित्त ॥ स० ॥ २ ॥ पडिरूयादिक चौद ठे ॥ गु० ॥
 खांत्यादिक दश धर्म ॥ स० ॥ पारलू जावना जाधिया

॥ गु० ॥ एह ठत्रीशी मर्म ॥स०॥३॥ दंसण नाण
 चरण तणा ॥ गु० ॥ तप आचारें युक्त ॥स०॥ क्रोधा
 दिक चिहुं परिहरे ॥ गु० ॥ पंचेंद्रिय त्याग प्रयुक्त
 ॥ स० ॥ ४ ॥ नवविध तत्त्वनी देशना ॥ गु० ॥ नव
 कवपी उग्र विहार ॥स०॥ नव नीयाणां परदृष्ट्यां ॥
 गु० ॥ नव वाडें व्रत धार ॥ स० ॥ ५ ॥ आतम वा
 जोठ उपरें ॥ गु० ॥ समकेत साधियो पूर ॥ स० ॥
 मूल उत्तरगुण गहूंअली ॥ गु० ॥ उपशम अक्षत
 जूर ॥ स० ॥ ६ ॥ कोकिल कंठें कामिनी ॥ गु० ॥
 सोहव गावे गीत ॥ स० ॥ माणक मोती खुवणां
 ॥गु०॥ श्री जिनशासन रीत ॥स०॥ ७ ॥ इति॥५४॥

॥ अथ समवसरणनी गहूंली पद्यावनमी ॥

॥ श्रावण वरसे रे स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ सांजख सजनी रे महारी, समवसरणनी शोचा
 सारी॥प्रथम गढ रूपानो राजे, सोवन कोसीसां तस
 ठाजे ॥ सांजख ० ॥ १ ॥ बीजो कंचननो गढ निरखो,
 रत्न कोसीसां जोइ जोइ हरखो॥त्रीजो रत्न तणो ग
 ढ सोहे, मणि कोसीसें मनहुं मोहे ॥ सां० ॥ २ ॥
 जुगतें सुरवर रे जडीयां, धीश हजार जेहनां पावडी
 यां ॥ मध्ये रत्न पीठ मनोहार, जडित सिंहासन

सोहे थपार ॥ सां० ॥ ३ ॥ तखतें राजे श्रीवर्द्धमा
 न, जाणे अजिनव उदयो जाण ॥ देव छुंछुजि नादें
 गाजे, वाजित्र कोडि गमे तिहां वाजे ॥ सां० ॥ ४ ॥
 सुगंध पाणी परिमल पूर, वरसे पंच वरणनां फूख ॥
 जाणे वसंत श्रुतु बहु फूली, भ्रमरा कुसुम कुसुम
 रखा फूली ॥ सां० ॥ ५ ॥ ये ये नाचे सुरवधू वाळा,
 गावे गीत सुकंठ रसाला ॥ चहुं दिशि चामर रेढख
 के, मणिमुक्ताफल तोरण ऊखके ॥ सां० ॥ ६ ॥ शिर
 पर ठत्र अन्नोपम सार, पुठें चामंजल तेज थपार ॥
 वेठी पर्पदा रे धार, वाणी वरसे जिम जलधार ॥
 सां० ॥ ७ ॥ राजा श्रेणिकनी राणी, नामें चेलणा
 गुणनी खाणी ॥ कुमकुम चंदन रे घोली, करती ग
 हूंली जामिनि जोली ॥ सां० ॥ ८ ॥ लखि लखि नम
 ती रे जावें, मुक्ताफलशुं वीरने वधावे ॥ हसि हसि
 जिनमुख रे जोती, जाणे जवडुःखडांने खोती ॥ सां०
 ॥ ९ ॥ पाणी परें जे कोइ गहूंली करशे, पुण्य पनोती
 जवजख तरशे ॥ कीर्ति गुरुनी रे गावो, माणक शिव
 सुख वेगें पावो ॥ सां० ॥ १० ॥ इति ॥ ५५ ॥

॥ अथ गहूंली ठप्पनमी ॥

॥ वर अतिशय कंचन घाने, राजगृही नयरी उंधा

ने हो ॥ धन धन मुनिराया ॥ आवीया गुरु
 स्वामी, सुर असुर नमे शिर नामी हो ॥ धन० ॥ १ ॥
 ज्ञानादिक गुण मणि जरीया, उपशम रस केरा दरी
 या हो ॥ धन० ॥ मुनि पंचसया परिवारें, जे थाप त
 स्या पर तारे हो ॥ धन० ॥ २ ॥ थाव्या जाणी चठ
 नाणी, श्रेणिक नरपति पटराणी हो ॥ धन० ॥ चे
 खणा नामें गुण पेटी, चेटक माहाराजनी बेंटी हो
 ॥ धन० ॥ ३ ॥ थावे गणधर वांद्या, शुरू समके
 त खाज खहेवा हो ॥ धन० ॥ करे स्तुति निव्य कर
 जोडी, दुर्दम मद थावने मोडी हो ॥ धन० ॥ ४ ॥
 करे कुंकुम स्वस्तिक मोती, वधावे पुण्य पनोती हो
 ॥ धन० ॥ करे सुवर्णां गुरुमुख निग्वी, हेयडामांहे
 घणुं हरखी हो ॥ धन० ॥ ५ ॥ निमुर्णा मज्जुर्णा
 वाणी, मीठी जे थमिय समाणी हो ॥ धन० ॥
 २ निर्मल समकित करणी, घरे पद्मोती समकित
 घरणी हो ॥ धन० ॥ ६ ॥ एम शासन सांद् वधा
 रो, करो नवियण सफळ नमारो हो ॥ धन० ॥
 घ्यान्ने अविनाशी निज राम
 धन० ॥ ७ ॥ ६

॥ अथ गहूंली सत्तावनमो ॥
 ॥ नदी यमुनाके तीर, उड़े दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥
 ॥ चंपानपरी उद्यानमां, गणधर आधीया ॥ नामें
 सोहम स्वामी, जविकमन जाविया ॥ विषय प्रमाद
 कपाय, हास्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, नि
 जपरीणति जजी ॥ १ ॥ नीरागी जगवान, करे गुण
 देशना ॥ उपकारी असमान के, तारे जविजना ॥ सु
 णवा जिनवर वाण, तिहां आब्या सहु ॥ नर नारी
 ना थोक के, हूँ मनें धहु ॥ २ ॥ वसन आचूपण
 घत, तणा थंगें धरे ॥ कोणिक जूपति नार, हवे गहूं
 ली करे ॥ समिति गुप्ति सहियरनी, साथें आवती ॥
 आत्म असंख्य प्रदेश, रकेवी आवती ॥ ३ ॥ अद्वाकुंकु
 म घोली, स्वस्तिक करे जावथी ॥ आतम पीठनी उपर,
 जिनगुण गावती ॥ विनयवती बहुमानथी; इस गहूं
 ली करे, अनुजवनां करि छुठणां, आणा तिलक धरे
 ॥ ४ ॥ इव्यजावथी एणी परें, जे गहूंली करे ॥ सम
 कितवंती आधिका, जव सायर तरे ॥ मणि उद्योत
 गुरुराजना, गुण सखी मन धरो ॥ पामी मनुज अब
 तार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥ ५७ ॥

॥ अथ गहूंखी अछावनमी ॥

॥ चरण करणगुण आगरु रे ॥ गणधर ॥ गिरूआ गौतम
स्वाम ॥ सुहावो गहूंखी रे ॥ सुरगुरु सुरतरु सुरमणि
रे ॥ गणधर ॥ प्रगटे जेहने नाम ॥ सु० ॥ १ ॥ नयरी
विशाला उद्यानमां रे ॥ गणधर ॥ वर्द्धमान बड
शिष्य ॥ सु० ॥ चौद सहस्र अणगारमां रे ॥ ग० ॥
तिलक समान जगीश ॥ सु० ॥ २ ॥ सुररचितकज
उपरें रे ॥ ग० ॥ बेसी बरसे वयण ॥ सु० ॥ कन
काचल चूला चढ्यो रे ॥ ग० ॥ पुष्कर जलधर अथ
न ॥ सु० ॥ ३ ॥ राणी चेलणा रायनी रे ॥ ग० ॥
फाल जबूके कान ॥ सु० ॥ स्वामी वीरजिणंदनी रे ॥
ग० ॥ चतुरा चंपकवान ॥ सु० ॥ ४ ॥ कुंकुम रयण क
चोखडी रे ॥ ग० ॥ रजत रकेवी हाथ ॥ सु० ॥
साथीयो रे ॥ ग० ॥ सात पांच सखी
साथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ पंचाचार उवारणे रे ॥ ग० ॥ वारू
पंच रतन ॥ सु० ॥ जिनशासन मुनि दीपतो रे
॥ ग० ॥ कीजें कोडी जतन ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंखी उंगणशावमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥
॥ राजएही रखीयामणी, जिहां गुणशीलचैत्य सुग

म ॥ साथण मोरी हे ॥ सहीयर मोरी हे ॥ घेहेन
 ड मोरी हे ॥ थावो सवाइ गुरु जेटवा, काइ मेटवा
 कर्म कवोर ॥ सा० ॥ स० ॥ वे० ॥ था० ॥ मुनि
 गणतारा चंद ज्युं, थाव्या गणधर गौतम स्वाम ॥ सा०
 स० ॥ वे० ॥ था० ॥ १ ॥ जेह पंचेंद्रिय वश करे,
 बली पाछे पंचा चार ॥ सा० ॥ जेह पंच समिति गुति
 धोरी परें, वहे पंच महाव्रत जार ॥ सा० ॥ स० ॥
 वे० ॥ था० ॥ २ ॥ नव वाडें ब्रह्म धरे सदा, बली
 परिहरे चार कषाय ॥ सा० ॥ जे खब्धि अछाबीशनो
 धणी, जयो थाठ प्राजाविक राय ॥ सा० ॥ स० ॥ वे० ॥
 थ० ॥ ३ ॥ पहेरेण पीत पटोखडी, उपर उढण नव
 रंग घाट ॥ सा० ॥ कुंकुम रोख सुसाथीयो, करे अक्षत
 पूरी सुघाट ॥ सा० ॥ स० ॥ वे० ॥ था० ॥ ४ ॥ बली खलि
 खलि कीजें सुठणां, खेइ रजत कनकनां फूज ॥ सा० ॥
 करो जिन शासन प्रजावना, बजडावो मंगल तूर ॥
 सा० ॥ स० ॥ वे० ॥ था० ॥ ५ ॥ इति ॥ ५९ ॥

॥ अथ गहूली शाठमी ॥ गरवानी देशीमां ॥

॥ बाळा राजगृही उद्यान के, धीर समोसखा रे
 सोख के ॥ बाळा मखिया चोशठ इंद्र के, बहु परि
 धारशुं रे सोख के ॥ बा० ॥ १ ॥ बाळा बधामणी

माहाराजनी, श्रेणिक सांजली रे लोल के ॥ वाला
 श्रेणिक पुर जन लोक के, सौ मली एकठां रे लोल
 के ॥ वा० ॥ १ ॥ वाला बंदी वेठो जूय के, प्रजुजी
 आगलें रे लोल ॥ वाला चेलणा धूधट ताणी के,
 उठी मन गहगही रे लोल के ॥ वा० ॥ ३ ॥ वा
 लास्वस्तिक पूरी पात, बधावे मन रुली रे लोल के ॥
 वाला लुठणां करे वारवार, सोहागण सहु मली रे लो
 ल के ॥ वा० ॥ ४ ॥ वाला सजी शोले शणगार के,
 मली घणी वालिका रे लोल के ॥ वाला एणी परें
 जे जिन आगल, करे नित गहूंअली रे लोल ॥ वा०
 ॥ ५ ॥ वाला जाय सकल जंजाल के, जवोदधि
 दुःख हरे रे लोल के ॥ वाला कहे गौतम निरधार
 के, चित्त चोखे करी रे लोल के ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ पर्यूपणने विषे कल्पसूत्र पधरा ॥

॥ बवानी गहूंली एकशठमी ॥

॥ जीरे ललित वचननी चातुरी, जीरे चतुर कहे
 गुरुराज ॥ जीरे सुगुण सनेही सांजलो, जीरे पर्युप
 र्यूपण आज ॥ जीरे ललित ॥ १ ॥ जीरे आश्रव
 ज्ञाव निवारीने, जीरे स्वजन सहित बहु मान ॥
 जीरे कल्पसूत्र घर लावीयें, जीरे अछाश्धर धरी

ध्यान ॥ जीरे लखित० ॥ २ ॥ जीरे दीपक अगार
 लखेविचें, जीरे रात्रि जागरण नित्य ॥ जीरे पूजा वि
 विध रचावीचें, जीरे त्रण दिवस इणि रीत ॥ जीरे
 लखित० ॥ ३ ॥ जीरे सुण सजनी रजनी गइ, जीरे
 कल्प धुरा परजात ॥ जीरे सहियर मली मंगल जणे,
 जीरे ह्य गय रथ मेळात ॥ जीरे लखित० ॥ ४ ॥
 जीरे वरघोडे जली जातशुं, जीरे शुचि तनु पुस्तक
 हाथ ॥ जीरे इम मंकाणें आवीया, जीरे जिहां श्रुत
 निधि गुरुनाथ ॥ जीरे लखित० ॥ ५ ॥ जीरे गुरुस
 न्मुख लही वांचना, जीरे प्रमुदित पर्पदामांद् ॥
 जीरे इणि थवसर गजगति सती, जीरे मुनिपद नम
 त उत्साद् ॥ जीरे लखित० ॥ ६ ॥ जीरे समकितवंती
 आविका, जीरे सहियर मली समदिष्ठ ॥ जीरे थनु
 जव उज्ज्वल मोतीचें, जीरे स्वस्तिक लक्षण पीठ ॥
 जीरे लखित० ॥ ७ ॥ जीरे स्वस्तिक पुरी वधावती,
 जीरे वेसती वेसण्ठाय ॥ जीरे पंच कल्याणक देशना,
 जीरे नव व्याख्यान सुणाय ॥ जीरे लखित० ॥ ८ ॥
 जीरे ठठ थठम तप जिन नमी, जीरे सांजखशे नर
 नारी ॥ जीरे श्री शुजवीरने शासने, जीरे करशे एक
 थवतार ॥ जीरे लखित० ॥ ९ ॥ इति ॥ ६१ ॥

॥ अथ गहूंली वाशछमी ॥

॥ हाररो हीरो माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ जगगुरु जगचिंतामणि ॥ सहियर मोरी ॥ जगबंधव
जगत्रात हो ॥ छारिकां नगरी समोसख्या ॥ सहि० ॥
घावीशमा जगतात हो ॥ उखट थाणी एतो, साज
ने जाणी एतो, पुण्यनी खाणी, शुद्ध थाविका ॥
जवि तमे गहूंली करो मनरंग हो ॥ १ ॥ हरि वांदी
नमी करी ॥ सहि० ॥ वेठा वे कर जोडी हो ॥ अमृ
तसम जिनदेशना ॥ सहि० ॥ सांजसे मनने खोडी
हो ॥ उख० ॥ साज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥
॥ २ ॥ श्याम शरीरें शोजना ॥ सहि० ॥ तेज तणो
नहिं पार हो ॥ ऊबक घनी जिनराजनी ॥ सहि० ॥
विश्व मानस हितकार हो ॥ उख० ॥ साज० ॥
॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ३ ॥ धन्य धन्य गणी
रुक्मिणी ॥ सहि० ॥ व्रत जूपण थंग हो ॥
तप सुघाट घूटी समो ॥ सहि० ॥ चूनडी मु
शीख सुचंग हो ॥ उख० ॥ साज० ॥ पुण्य० ॥
शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ४ ॥ क्रिया कुंकावटी फर पही
॥ सहि० ॥ जिनगुण कुमकुम पोख हो ॥ मननिर्म
ल जस जेखती ॥ सहि० ॥ चित्त उल्लसी मनरंग

री ॥ श्री सोहम गणधार हो ॥ आप स्वप्नावसां खे
 लता, सहियर मोरी ॥ धरता ध्यान उदार हो ॥ सह
 ज सोजगी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुभमति जागी
 गुरु वांदवा ॥ सहियर मोरी, चालोने हर्ष उल्लास हो
 ॥ १ ॥ वारे जावना जावतां, सहियर मोरी ॥ अनि
 त्यादिक गुणगेह हो ॥ माहाव्रत पामीने बली ॥ स
 हि० ॥ जावे पणवीश तेह हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥
 शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ २ ॥ संज्ञादिक योगें
 करी ॥ सहि० ॥ सहस्र अठार जे थाय हो ॥ तेह
 ने शीख कहीजियें ॥ सहि० ॥ ते पासे निर्माय हो
 ॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो०
 ॥ ३ ॥ समिति गुप्ति सूर्यी धरे ॥ सहि० ॥ चरण
 करण गुण धाम हो ॥ पडिसेहण आवश्यकादिकें ॥
 सहि० ॥ अहोनिश रहे सावधान हो ॥ सह० ॥ शिव०
 ॥ शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ४ ॥ सदाचार एम
 पासतां ॥ सहि० ॥ वनें आतमनाय हो ॥ नयरी राज
 गृही आश्रिया ॥ सहि० ॥ जयोदधि नारण नाय हो
 ॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥
 ॥ ५ ॥ उदंत मुणीने आश्रियो ॥ सहि० ॥ वंदन श्रे
 णिकराय हो ॥ सायें राणी चैवणा ॥ सहि० ॥ गहूं

ली करे गुण गाय हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुभ० ॥
 सहि० ॥ चाखो० ॥ ६ ॥ मनमोहन गुरु तिहां कणे
 ॥ सहि० ॥ देई देशना हितकार हो ॥ जाव ध
 रीने जे सुणे ॥ सहि० ॥ ते लहे सुख श्रीकारहो
 ॥ सहज सोजागी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुभ
 मति जागी गुरु बांदवा ॥ सहियर मोरी, चालोने हर्ष
 ग्वास हो ॥ ७ ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥ अथ गहूंली चोशठमी ॥

। जगजीवन जमुना रे, जल जरवा द्यो ॥ ए देशी
 ॥ आतमरुचि गुणधारणी रे, मनोहारणी ॥ करे
 गहूंथली तजी खेद रे ॥ सुखकारणी ॥ नाम स्थाप
 ना ऊर्ध्वी रे ॥ मनोहारणी ॥ जावे मंगल चिहुंजेद रे ॥
 सुख० ॥ १ ॥ जीव अजीव ने मिश्रयी रे ॥ म० ॥
 एतो नाम मंगल त्रिहु नाम रे ॥ सु० ॥ आपे मंग
 ल ए सही रे ॥ म० ॥ कीजें नित नित शुभ काम रे
 ॥ सु० ॥ २ ॥ आगम नोआगमयकी रे ॥ म० ॥ ए
 तो ऊर्ध्वमां होय विचार रे ॥ सु० ॥ जावमांहे दोय ए
 वली रे ॥ म० ॥ तेह नोआगम अधिकार रे ॥ सु० ॥
 ॥ ३ ॥ नंदी दाखी सूत्रमां रे ॥ म० ॥ सही जाव
 मंगल होय तेह रे ॥ सु० ॥ पंच नाण निर्विभतां

रे ॥ म० ॥ एतो मेरुनु कारण सेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥
 अंत कथा ए तावता रे ॥ म० ॥ एतो रावति ये
 नमिन् रे ॥ सु० ॥ अद्य मंगल भेदी करो रे ॥ म० ॥
 एतो महुअदी जिनमन रीत रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ टावे
 जन्म मणायही रे ॥ म० ॥ कथा मंगल वाडइ नि
 रज रे ॥ सु० ॥ अण्णमाय न आवही रे ॥ म० ॥
 त्रि कीजे जन्म पमिल रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ योग जे
 जिनमन रे ॥ म० ॥ मनि अण्णम मंगल रे
 सु० ॥ शिवकथ दावक न महु रे ॥ म० ॥ कहे
 मन्म मदागमरीत रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ ८ नि ॥ ६३ ॥

॥ अथ महुअदी वाडवसी ॥

॥ वाडवसी लट्ट लट्ट ॥ १ ॥ देसी ॥ आगल आवु
 पीडिय, वहुअदी गुरु पावे रे ॥ आवा पुण अं
 करी, निजम कही दुहाय रे ॥ आ० ॥ १ ॥ महु
 दावक मन्म वा, पवन कावे पादा रे ॥ कीमे
 वहु अट्टरी, लट्ट लट्ट पादा रे ॥ आ० ॥ २ ॥
 वहुअदी देवता, जे ईनि जेन मन्म रे ॥ कीमे
 देवता मन्म, लट्ट लट्ट पादा रे ॥ आ० ॥ ३ ॥
 अण्णमन्म प्रमाणमा, जे त्रिपुण विज लहे रे, अ
 न्णमन्म अण्णमन्म, अण्णमन्म जेन मन्म रे ॥ आ० ॥

॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाणथी, साधुनो बंध सुरीतें
 रे ॥ तत्त्वातत्त्व विशेषणा, खदीयें परम प्रतीतें रे
 ॥ आ० ॥ ५ ॥ तत्त्वार्थ श्रद्धान जे, समकित कहे
 जिनराया रे ॥ जापण रमण पणे खहे, जेद रहित
 मति पाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ स्वस्तिक पूजन जावना,
 करता जकि रसाख रे ॥ पुण्य महोदय पामीयें, केव
 ख श्रद्धि रसाख रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६५ ॥

॥ अथ गहूंली ठाशठमी ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने बंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सजनी शासन नायक दिख धरी, गाशुं तपग
 ठ राया हो ॥ अखबेली हेली ॥ सजनी जाणीयें सोह
 म घणधरु, पटधर जगत गवाया हो ॥ अखबेली हेली
 ॥ सजनी वीर पटोधर बंदियें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ स
 जनी वसुधापीठने फरसता, विचरता गणधार हो
 ॥ अ० ॥ स० ॥ ठत्रीश गुणशुं विराजता, ठे जवि
 जनना आधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ २ ॥ स० ॥
 तखतें शोहे गुरुराज जी, उदयो जिम जग जाण हो
 ॥ अ० ॥ स० ॥ निरखतां गुरुराजने, बूके जाण
 अजाण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ३ ॥ स० ॥ मु
 खहुं शोहे रे पूरण शशी, अणीयाळां गुरुनेण हो

॥ अ० ॥ स० ॥ जलधरनी परें गाजता, करता न
 जन सेण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ यी० ॥ ४ ॥ स० ॥
 अंग उपांगनी देशना, यरमत अमृतधार हो ॥ अ०
 स० ॥ श्रोता सर्वना दीक्ष ठरे, संयमगुं धरे प्यार हो
 ॥ अ० ॥ स० ॥ यी० ॥ ५ ॥ स० ॥ गुन शणमा
 सजी करी, मोतीयडे नरी आस हो ॥ अ० ॥ स० ॥
 श्रद्धा पीठनी उपरें, पुंरें गहूंसी विदास हो ॥ अ०
 स० ॥ यी० ॥ ६ ॥ स० ॥ मोनाय उदयमूरि प
 टना, धारक गुरु गुणराज हो ॥ अ० ॥ स० ॥ श्री
 विजयवर्द्धनी मूर्तिद जी, दीपविजय कविगज हो
 अ० ॥ स० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंसी मदनदमी ॥

॥ कहीने रटोपासी रे बाइलानारी गांगरी रे
 देसी ॥ मुकुन नरनी बैल बधावा रे, गीतनी ठपनाम
 ठदकनी धार, गुरुगुण हृदय धरंभी प्यार, मानु स
 दानो अवनार ॥ सु० ॥ १ ॥ पुण पनोमी रे सार्य
 सादेसीयो रे, मर्ती मर्ती जोत्र गती शयमार
 कर परी रजन रेहदी मार, कुकुम घोड़ी करी मनो
 दार ॥ सु० ॥ २ ॥ अह्न माग रे ठगवप्रता प्रया
 रे, पूरनी मन्त्रिकर्ममउ मार सुानी विहूं गति कांध

ज चार, ठवती श्रीफळ हर्षे अपार ॥ सु० ॥ ३ ॥
 अनुजय रंगें रे मोती बधावती रे, ललित परिणामें
 नमती पाय, गुरुमुख देखी हर्षे न माय, सन्मुख
 बेसती बेसण गाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ जोजन पामे रे
 अमृत जूखमां रे, नागर ग्रीपम पाम्यो गंग, जिन
 वाणी सुणवानो रंग, अर्थ मनोहर नय गम जंग ॥
 ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्रीशुजवीरनुं शासन पामीने रे, धरती
 दैयढे समकितवास, अनुक्रमे केवलज्ञान प्रकाश,
 मलती मुक्ति सहेली पास ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ६७ ॥

॥ अथ गहूली अडशष्ठमी ॥

॥ देशो उपरली गहूलीनी ॥ गिरिवेजारें रे धीर स
 मोसख्यारे, चौद सहसमुनिवर संधाय, त्रिगडे वेठा
 त्रिजुवनराय ॥ १ ॥ रुडीने रढीयाली रे जिनजीनी दे
 शना रे ॥ ए टेक ॥ परसे जिम पुष्कर जलधार, सांजल
 वा वेठी परखदा धार ॥ रुडी० ॥ २ ॥ निजनिज जापायें
 समजे सहू रे ॥ जिम समजायी जीजेनार, योजन जिन
 वाणी उदार ॥ रुडी० ॥ ३ ॥ नय गम जंग प्रमाण
 निक्षेपयी रे ॥ जीवादिक नवतत्व विचार, उत्पाद व्य
 य भुशयी धार ॥ रुडी० ॥ ४ ॥ दान शीपख तप जाय जे
 दें फरी रे ॥ चठनखयी चो जिनवर वाण, निमुणी पा

घत्रीश बरू नाटक रची सार, करी नर नारी रूप
 रसाख, खलके कंकणना खलकार, प्रभुने बंदे रे दर्द
 रांक सुर सार, झातासूत्रे रे वरणवियो अधिकार,
 समकित संगे रे मटे मिथ्यात्व निर्धार ॥ वी० ॥ ३ ॥
 चेखणा नारी मन हरखाणी, थंगे अनेक शणगार
 सोहाणी, बहुत साहेलीकी ठकुराणी, कुंकम घोली
 रे साथीयो रंग रसाख, रयणें पूरी रे बधावे जरी था
 ख, नेह धरीने रे गुण गाये उजमाल ॥ वी० ॥ ४ ॥
 त्रिशला नंदन सूरिजन बंदों, अवसर लइ था फंद
 निकंदो, पामे नित्य नवनवा आनंदो, बहु चिरंजीवो
 रे तीरथपति सुखतान, दिख जरी ध्याउ रे प्रभुगुण
 नुं घणुं मान, संपदा पामो रे लक्ष्मीसूरि गुण ठाण
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ गहूंली सीत्तेरमी ॥

॥ प्रभुजी आख्या रे शहेर जरुअचके मेदान, अश्व
 प्रतिबोध्यो रे जाणे पूरवको सयाण ॥ ए टेक ॥ ऊलके
 उगमते परजात, जूपति हरख्यो रे साख्यो अर्थीको
 काज, स्वामीजी बांध्या रे बहु फोजां के साज, जक्ति
 रागें रे जीव पामे शिवराज ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ उपदेश
 आपे त्रिभुवनजाण, सुणे परखदा घारे बाण, मन

मां जाणे कोइ सुजाण, नृप पूठे रे मुनि सुव्रत जि
 नराय, प्रतिबोध्यो रे कोइ जीव एणे ठाय, देवे दीगो
 रे एक तुरंग धर्म ध्याय ॥ प्र० ॥ २ ॥ अणसण
 लेइ प्रभुके पाय, पहोतो सुरलोकें दिख लाय, तीर
 थ थापे मन उमाय, संघ सेवे रे दूरदेशथी थाय,
 जावना जावे रे तजी विषय कपाय, दुःसम कालें रे
 ए महिमा गवराय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ नाटक नाचे नव
 नव रंग, करे अशुभ करमनो जंग, साचो समकित
 गुणनो रंग, सूत्रें दीसे रे सूरियाज सुरनो अधिकार,
 पूजा कीधी रे सतर जेद सुखकार, शंका टाले रे ज
 विक जीव निरधार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पद्मावतीनो नंदन
 महाजाग, दाखे शिवगति पूरिनो माग, जगमांहे क
 हेवाये वीतराग, आठे रायो रे जिनशासन सुलतान,
 माग्या दीजें रे मनवंवित प्रभु दान, वांठा कीजें रे वि
 ५ विमल शुभ ध्यान ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७० ॥

॥ अथ गहंली एकोतेरमी ॥

॥ वीरजी आया रे गुणशीलवनके मेदान ॥ ए देशी ॥
 ॥ जवियण बंदो रे चोवीशमो जिनराय, सुगति
 थापे रे टाळे कुगति कुठाय ॥ ए टेक ॥ पावन देशां
 तर करता स्वाम, विचरंता वली गामो गाम, पातक

जाये लीवे नाम, जग पडियोहे रे ए त्रिहुं लोक
नो नाय, मुनि परिवार रे चउद सहस ठे संघात,
सायर ठोडी रे कोण सेवे ठीखर पाथ ॥ जवियण०
॥ १ ॥ राजगृही नयरी उद्यान, गुणशीला चैत्यके
मेदान, थाया पुंनरिक प्रधान, सुर तिहां रचे रे स
मवसरण तैणि वार, इंड इंडाणी रे वंदे प्रजुने
अपार, आनंद पावे रे देखी प्रजुनो देदार ॥ जवि० ॥
॥ २ ॥ वननो पाखक जेहनुं नाम, दीधी वधामणि
जइने ताम, श्रेणिक हरख्यो सुणीने नाम, चलचित्त
थीयो रे मगधपति माहाराज, परिवार संयुक्त रे
साथें रमणी समाज, तिहांथी चाख्यो रे प्रजुने वं
दन काज ॥ जवि० ॥ ३ ॥ चतुरंगी सेना सजीय उ
दार, गज रथ पायक अमुल तुखार, बहु नव उत्तर
वाने पार, श्रेणिक हरखे रे वंदे प्रजुजीना पाय,
प्रजुपद वंदी रे ठेगो यथोचित गाय, तव उपदेसे रे
वीर जिनेसर राय ॥ जवि० ॥ ४ ॥ चेलणा राणी अति
सोजागी, जिन वंदिने जक्ति जागी, गहूंली करवा रढ
घहु छागी, कनक चोखा लइ रे हाथे अतिही रसाख
गहूंली पूरे रे, जगपति आगें विशाल, मोतीडे वधावे
रे, टाखे पाप प्रजाख ॥ जवि० ॥ ५ ॥ देशना दीधी

श्रीजगवंत, शंशय टाड्या श्रीअरिहंत, श्रेणिक वंदी
पुर पद्मोचंत, एम बहुजावें रे नित्य नित्य मंगल गाये,
सुश्रुत कमावे रे दीपविजय कविराय॥जवि०॥६॥इति॥

॥ अथ गहूंली बहोंतेरमी ॥

॥ जिनराज पूजी लाहो लीजीयें ॥ ए देशी ॥

॥केशरचंदन जरीय कुंकावटी, सोवनथासले कामिनी॥

गहूंथली करीने मंगल गाई, बखिहारी गुरुनामनी

॥ गहूंली करे रे गजगामिनी ॥ १ ॥ शोख शणगार

सजीनें सुंदर, जाणे जवूके दामिनी ॥ साधु साधवी

आवक आविका, जरी रे सनामां नामिनी ॥ गहूंली०

॥ २ ॥ नवखंई नवरंगी निरुपम, विधविधरंग व

नावनी ॥ मोतीयें सार्थीया पूरे मनोहर, जक्ति करे

शुन जावनी ॥ ग० ॥ ३ ॥ प्रवचन रचना जग

जन पावन, देशना श्रीगुरुरायनी ॥ धवल मंगल गां

॥ ४ ॥ गानें, सांजसे सहु सुखदायिनी ॥ ग० ॥ ४ ॥

॥ तन वाचक उपदेशें, रुमी सना रसरागनी ॥

प्रीते ते परमारय पामे, याणी श्रीश्रीतरागनी ॥ ग० ॥ ५ ॥

॥ अथ गहूंली बहोंतेरमी ॥

॥ सजनी मोरी गुणशीघ्रवनकें मेदान रे, सजनी मो

री आख्या श्रीवर्द्धमान रे ॥ स० ॥ इत्यानादिक गुणदरी

या रे ॥ स० ॥ पतित पावन पीयरीया रे ॥ स० ॥ १ ॥
 ॥ ए आंकणी ॥ स० ॥ श्रेणिक हरख्यो आवे रे
 ॥ स० ॥ समकित द्वायिक जावें रे ॥ स० ॥ कंचन
 वरणी नार रे ॥ स० ॥ पंचसया परिवार रे ॥ स०
 ॥ २ ॥ स० ॥ धर्मदेशना जिन जांखे रे ॥ स० ॥ न
 वपद महिमा दाखे रे ॥ स० ॥ नवपद आत्म जा
 णो रे ॥ स० ॥ आत्म नव पद बखाणो रे ॥ स०
 ॥ ३ ॥ स० ॥ नवतत्त्व जूपण सार रे ॥ स० ॥ रत्न
 रकेयी उदार रे ॥ स० ॥ श्रवण मनन बहु मूख रे
 ॥ स० ॥ पहेरी वस्त्र अनुकूल रे ॥ स० ॥ ४ ॥ स० ॥
 क्रिया कुंठावटी हाथ रे ॥ स० ॥ मन निर्मलने
 पाथ रे ॥ स० ॥ जिनगुण कंकु घोली रे ॥ स० ॥
 मली सहीयरनी टोली रे ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥
 आणा तिलक धरावे रे ॥ स० ॥ चेखणा गहूली
 घनावे रे ॥ स० ॥ एणी पंगे गहूली कीजें रे ॥ स० ॥
 नरनव खादो लीजें रे ॥ स० ॥ ६ ॥ स० ॥
 विषय ते विष सम जाणो रे ॥ स० ॥ घोखे द्रव्य
 जुवननो राणो रे ॥ स० ॥ शिवपुत्र सासरे चाखो रे
 ॥ स० ॥ नुजपमांहे माहाखो रे ॥ स० ॥ ७ ॥
 स० ॥ मणि उद्योन गुरु मलीया रे ॥ स० ॥ आज

मनोरथ फलिया रे ॥ स० ॥ शुं कहीयें बारो बार
रे॥स०॥ ते कां करो परिहार रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रनी गहूंली चम्मोतेरमी ॥

॥ हारे महारे ठाम धर्मना साडा पच्चवीश देश जो ॥ ए
देशी ॥ हारे माहारे जिनआणा लेइ इन्द्रभूति गण
धार जो, विचरे रे चउविह अग्रतिबंध विहारथी रे
लो ॥ हारे महारे संयम धारी मुनिगणना शिरदार
जो, चउझानी शुजध्यानी धर्मना सारथी रे लो
॥ १ ॥ हारे महारे राजगृही उद्याने आवा नाथ
जो, हरख्यो रे मगधाधिप त्रिकरण जावशुं रे लो॥
हारे मारे आवे नृप चेलणादिक राणी साथ जो,
अंग नमात्री बंदे गणधर पावने रे लो ॥ २ ॥
हारे महारे जवनिस्तरणी जिनवाणी उपदेश जो,
जाखे रे प्रभु गोयमस्वामी रंगथी रे लो ॥ हारे
मारे सेवो जविजन सिद्धचक्र शुज लेश जो, बहुसु
ख पाभ्यां मयणा तेहना संगथी रे लो ॥ ३ ॥
हारे मारे अवसर पामी मगधाधिपनी नार जो, उ
छस्ती रे मन हर्षां स्वस्तिक पूरवा रे लो॥ हारे मारे स
हियर मंगल गाती गीत अपार जो, मानुं जव जव
संकटने ए चूरवा रे लो ॥ ४ ॥ हारे मारे इणी

विध स्वस्तिक पूरे श्रद्धा पीठ जो, पामे रे ते भंगल
 माला माननी रे लो ॥ हरि मारे शिवपद कारण
 जावें जोग उक्किष्ठ जो, दीपकदे एम ए ठे वात नि
 दाननी रे लो ॥ ५ ॥ इति ॥ ७४ ॥

॥ अथ गहूंली पंचोत्तरमी ॥

धोलनी देशीमां॥राजगृही उद्यानमां,श्रीसोहम ग
 णधार ॥ समोत्तरिया परिवारशुं, मुनिजनना आधा
 र ॥ १ ॥ चालो सखि गुरु बांदवा ॥ ए आंकणी ॥
 पंच महाव्रत पाळता, दशविध यतिधर्म सार ॥ सत्त
 र जेदें संयम वस्त्रा, वेयावच्च दश धार ॥ चा० ॥२॥
 गुप्ति धरे नववाडशुं, ज्ञानादिक तप धार ॥ निग्रह
 क्रोध तणो करे, चरणसित्तरि शणमार ॥ चा० ॥३॥
 पिंरुविशुद्धि समिति धरे, जावना पडिमा धार ॥ इं
 द्रियरोधक पन्निजेहणा, गुप्ति अजिग्रहधार ॥ चा०
 ॥ ४ ॥ करणसित्तरि ए पालवे, टाळे सकळ कलेश ॥
 कमलासने वेली कहे, जविजनने उपदेश ॥ चा०
 ॥५॥ श्रेणिक नृपति मानशुं, प्रणमी पटोधर राय ॥
 उचित अवग्रह ते साचवे, धर्म सुणे सुखदाय ॥ चा०
 ॥६॥ गुणवंती करे गहूंथली, चतुरा चेळणानार ॥
 माणक मोती वधावती, जरती सुकृत जंमार ॥ चा०

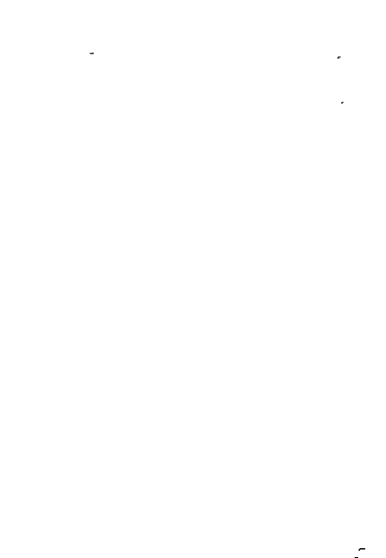
प्रमुख सुणी वंदन आवे, अंतरंग राणी गहूंली लावे ॥
उत्तम गुरूपद पद्म वधावे तो ॥ गो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एंशीमी कुमखडानी देशी ॥

॥ ज्ञानदीवाकर शोजता, श्रुतसागर मुनिराज ॥ सु
हंकर साधु जी ॥ मूकी काम विडंबना, कूखी संवल
साज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ १ ॥ नहिं ममता सम
ताधरा, शांत सुदंत महंत ॥ सु० ॥ पटपद वृत्ति आ
हारता, देश काल मतिमंत ॥ सु० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत
जावना, जावंता पचवीश ॥ सु० ॥ पणवीश चित्त
न धारता, अशुज जावन निश दीस ॥ सु० ॥ ३ ॥ शिवना
री रंजन जणी, पहेस्यो साधुनो वेश ॥ सु० ॥ ते
आगल मृगलोचना, करती विनय विशेष ॥ सु० ॥
॥ ४ ॥ क्रोधादिक चउ जीतवा, बरवा चार अनंत ॥
सु० ॥ स्वस्तिक पूरी वधावती, सज्जु चरण नमंत
सु० ॥ ५ ॥ गावे सोदागण गहूंथली, धरती दर्प
अमंद ॥ सु० ॥ श्रीशुजवीर वचन सुणी, पामे पद
महानंद ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ७० ॥

॥ अथ गहूंली एकाशीमी ॥

॥ अने द्वारे सरसतीने चरणे नमी रे, वांडुं गुरुना
पाय ॥ अखिय विघन सवि टखे रे, मागुं एक पसा



ऊननी पटराणी, चउ मंगल प्रनु आगें ॥ पूरे स्व
स्तिक मुक्ताफलनो, चडवा शिवगति पागें ॥ अमृत०
॥ ६ ॥ चउ अनुयोगी आतमदर्शी, प्रनुवाणी रस
पीजें ॥ दीपविजय कवि प्रनुता प्रगटे, प्रनुने प्रनुता
दीजें ॥ अमृत० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथ जंबुकुमारनी गहुंसी चोराशीमी ॥

॥ घरुडामें सहियो कूसे हाथणी ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही नयरी ममोमस्था, पांचशें मुनिपरिवार
॥ मोरी सहियां हो ॥ कंबलज्ञान दिशाकर, श्री श्री
सोहम गणधार ॥ मोरी० ॥ चाखो पटोधर गुरु पां
दवा ॥ १ ॥ ए आकर्णी ॥ जंबुकुमार आये हेजगु,
पूज्यजीने वंदन काज ॥ मोरी० ॥ ब्रह्मनारी शिर
सेहरो, सेवा मुक्तिगद गज ॥ मोरी० ॥ चाखो०
॥ २ ॥ गुरुमुखश्री रे मुर्णो देशना, संयमं उद्यमिन
जाव ॥ मो० ॥ हाथिक ममकंतना धर्णी नग्याने
जवजस दाव ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ आणुवन केह
गुरु आगखें, संयमनो रे ठजमास ॥ मो० ॥ परणी
ने घरणी आवने, पूज्यी वयण रसास ॥ मो० ॥
चा० ॥ ४ ॥ संयम खीये मुनि पांचशें, सत्तावीश
परिवार ॥ मो० ॥ घरण कण्ठ गुप्त आगसा, जेह



सखी मांकडे महाजन घेरीयो रे ॥ ५ ॥ सखी उंद
मेरु दलावियो रे ॥ सखी सूर्य अजवाहुं नेवि क
रे ॥ सखी लघु बंधव बत्रीश गया रे ॥ सखी शो
घडी नहीं वेनडी रे ॥ ६ ॥ सखी शामलो हंस
देखीयो रे ॥ सखी काट बल्यो कंचनगिरि रे ॥ सखी
अंजनगिरि उज्ज्वल थया रे ॥ सखी तोहे प्रजु न स
जारीया रे ॥ ७ ॥ सखी वयरसामी सुता पोरण
रे ॥ सखी आविका गावेहाखरां रे ॥ सखी महोद
यइ अर्थ ते कहेजो रे ॥ सखी श्रीशुजवीरने वाह
खडा रे ॥ ८ ॥ इति हरियालीनी गहुंली ॥ ८५ ॥

॥ अथ चूनडी व्याशीर्मा ॥

॥ हांजी समकित पाखो कपासनो, हांजी पेंजण
पाप अढार ॥ हांजी सूत्र जहुं रे सिद्धांतनुं, हांजी
टालो आठ प्रकार ॥ हांजी शीयल सुरंगी चूनडी ॥ १ ॥
हांजी घण गुप्ति ताणो ताणो, हांजी नलीय जरी
नव वाड ॥ हांजी वाणो वाणो रे विवेकनो, हांजी
खुंटीय खाय ॥ हांजी शी० ॥ २ ॥ हांजी मूल
उत्तर गुण घूघरा, हांजी ठेडा वणो ने चार ॥ हां
जी चारिघ्र चंदो वझे धरो, हांजी हंसक मोर च
कोर ॥ हांजी शी० ॥ ३ ॥ हांजी अजब विराजे

चूनडी, हांजी कहो सखी केटलुं मूल्य ॥ हांजी छाखें
 पण छाजे नहीं, हांजी पद् नहीं सम तोख ॥
 हांजी शी० ॥ ४ ॥ हांजी पहेली ठंडी श्री नेमजी,
 हांजी बीजी राजुख नेट ॥ हांजी श्रीजी गजसुकु
 माखजी, हांजी चोथी सुदर्शन शेठ ॥ हांजी शी०
 ॥ ५ ॥ हांजी पांचमी जंबू स्वामीने, हांजी ठठी
 धनो शणगार ॥ हांजी सातमी मेघ मुनीसरू, हांजी
 आठमी एवंती कुमार ॥ हांजी शी० ॥ ६ ॥ हांजी
 सीता कुंता औपदी, हांजी दमयंती चंदनवाख
 ॥ हांजी श्रंजना ने पद्मावती, हांजी शीयखवती
 अतिसार ॥ हांजी शी० ॥ ७ ॥ हांजी अजघ
 बिराजे रे चूनडी, हांजी साधुनो शणगार ॥ हांजी
 मेघ मुनीसर एम जणे, हांजी शीयख पाखो नर
 नार ॥ हांजी शी० ॥ ८ ॥ इति ॥ ८६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्याशीमी ॥

॥ धरे आवोजी आंधो मोरियो ॥ ए देशी ॥

॥ चाखो सहियरोजी साधुजी घंदीयें, श्रीबीतरणा
 पटोधार रे ॥ चठनाणी सोहम गणधरु, सूत्र रय
 ण तणा जंमार रे ॥ चाखो ॥ १ ॥ एकविध असं
 यम टाखता, धर्म दोय यति एही गमता रे ॥ त्रि

विध गारवने परिहरे, चार सुख शय्या मांहे रमतार
 ॥ चाखो ॥ २ ॥ प्रमाद तजे जजे व्रतीने, जय टाखे
 मातने पाखे रे ॥ नियाणां न करे साधु जी, दश ध
 मण धरम अनुवाखे रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ अक्षावंती
 शुद्ध आधिका, गुरु आगल जक्ति करंती रे ॥ गुरु आ
 गल पूरे गहूंथली शासन करती बहु उन्नति रे ॥
 चा० ॥ ४ ॥ जिनवाणी अनुजवरस जरी, गुरु उत्तम र
 क्षना मुखयी रे ॥ सुणतां पामे निज आतमा, सुख
 अनुजवमां रहे पथी रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७७ ॥

॥ अथ तपनी जाप्य अठ्याशीमी ॥

॥ साहेया महारा अरज करुं तुं कंत, कहे सुणो
 कामिनी जी ॥ साहिया महारा गुरु उपदेशें तुं सहि
 यां मांहे ऊपनी जी ॥ १ ॥ सा० ॥ आह्वा आपो, मास
 स्वमण तप आदरुं जी ॥ सा० ॥ अवसर पामी, मान
 व जव सफखो करुं जी ॥ २ ॥ गोरी माहारी हाथ
 न पाखे, मन नत्रि चाखे मादरुं जी ॥ गोरी महा
 री ए तप महोदुं, शरीर स्वमे नहिं तादरुं जी ॥ ३ ॥
 सा० ॥ स्योने आदरुं, संवत्सरीना खांखा पापरुं
 जी ॥ सा० ॥ मान मागुं तुं, अंतराय तमें कां करो
 जी ॥ ४ ॥ गोरी अमें आह्वा आपी, पचखाण जइ

ता ज्ञान श्रज्यास ॥ मो० ॥ चा० ॥ २ ॥ पहेसो
 श्रध्यातमयोग जे, जावनायोग तेम जाण ॥ मो० ॥
 ध्यानयोगें त्रीजो सही, समता योग मन होय ॥
 मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ एम श्रनेक गुणें शोजता, धीर
 श्राणा खेड मान ॥ मो० ॥ गोयमस्वामी समोसस्या,
 राजगृही उद्यान ॥ मो० ॥ चा० ॥ ४ ॥ श्रेणिकराय
 श्रावे वांदवा, सुणी श्रागमन उदंत ॥ मो० ॥ दापि
 क समकितनो धणी, वांदे गुरु गुणवंत ॥ मो० ॥ चा०
 ॥ ५ ॥ इण श्रवसर राणी चेलणा, जाव सजी शण
 गार ॥ मो० ॥ श्रद्धार्पीठ उपर सही, गडूंखी करे म
 नोद्धार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ६ ॥ नव गोयम दियेदेश
 ना, सेवो नविक सिद्ध चक्र ॥ मो० ॥ श्रांविज उखी
 श्रावावियें, जिम न पडो नयचक्र ॥ मो० ॥ चा० ॥
 ॥ ७ ॥ पांचे धर्माने चार धर्म ठे, धर्मा सेव्या धर्म
 होय ॥ मो० ॥ मयणा ने श्रीपावनो, संबंध कहे
 सवि सोय ॥ मो० ॥ चा० ॥ ८ ॥ वखी नयपदम
 य ठे श्रातमा, श्रातम नयपद जोय ॥ मो० ॥ एये
 य ध्याता ध्यान पकर्यी, नेद सहो नवि कोय ॥ मो०
 ॥ चा० ॥ ९ ॥ श्रातमधर्माने देशना, धारजो तदय
 मजार ॥ मो० ॥ श्रिनाविजय जस संपदा, शुनवि



फेरा हो जवमांहि अनंत ॥ आतमराम सुगुरु हवे,
मुऊ दीजें हो सहि सुख अनंत ॥ वखि० ॥७॥इति॥

॥ अथ गहूंली एकाणुंमी ॥

॥ रूडीने रढियाली रे समकित आविका रे ॥ सज
करि शोल जला शणगार, कर धरी रजत रकेवी
सार ॥ रूडीने० ॥ १ ॥ कुंकुम रूडी मांहे कुंकावटी
रे ॥ कुंकुम थाल जस्यो करि श्रीकार, निरखवा
चालीगुरु देदार ॥ रूडीने० ॥ २ ॥ सहियर टोली रे
साथें मली संचरी रे ॥ जई गुरु केरा वंदे पाय ।
गहूंली करे शुज चित्त लाय ॥ रूडीने० ॥ ३ ॥ मंग
ख करती रे निज आतम जणी रे ॥ वखि जलो कं
णनो करे रणकार ॥ धाय रूडो जांऊरनो ऊमकार ।
रूडीने० ॥ ४ ॥ लूठणां करती रे गुरुगुण हेजशुं रे
॥ श्रीफस ठवती करे रंगरोस ॥ जाणती नथी को
गुरुने तोस ॥ रूडीने० ॥ ५ ॥ मंगस करती हियबे
हेजशुं रे ॥ वखि सुणी आगमनो समुदाय ॥ जवजल
सायर तरण उपाय ॥ रूडीने० ॥ ६ ॥ उत्तम घरनी
रे श्रवणें चेतना रे ॥ सांजली ह्यडे हरख न माय ॥
प्रेम कहे जिम अमिय समाय ॥ रूडीने० ॥ ७ ॥ ए१ ॥

॥ अथ जयंती श्राविकानी गहूंली बाणुंमी ॥

॥ फतमखनी देशी ठे ॥

॥ चित्तहर ॥ ॥ चोवीशमा जिनराय, नयरी कोसं
 वी समोसत्या ॥ चि० ॥ मनमोहन मुनिराज, चढ
 द हजारें परवत्या ॥ १ ॥ चि० ॥ सुरनर परपदा
 वार, रतन गढें आवी ठत्या ॥ चि० ॥ चेठा सिंहा
 सन नाथ, चामर ठत्र अखंकत्या ॥ २ ॥ चि० ॥ चंदे उदा
 यन जूप, रूप चार दर्शन दिये ॥ चि० ॥ समकिती व्रत
 धरलोक, कोक कमलपरें विकसियें ॥ ३ ॥ चि० ॥ रंजा
 अप्सरा ताम, गहूंली करीने वधावती ॥ चि० ॥ रूपें
 जयंती समान, नामें जयंती माहासती ॥ ४ ॥ चि० ॥
 वीर अक्षर दोय मंत्र, जपती नित्य जपमाखिका
 ॥ चि० ॥ जक्ति सोवन रसी देह, जेह हजुरी श्रा
 विका ॥ ५ ॥ चि० ॥ नष्टाद जोजाइ साथ, नाथ
 आगल ऊज्जी रही ॥ चि० ॥ प्रश्न पूठे कर जोडी,
 प्रजुजी उत्तर देता सही ॥ ६ ॥ चि० ॥ जागता उंघता
 कोण, उद्यमी आलसु कोण जला ॥ चि० ॥ धर्मी
 अधर्मी लोक, शतक वारमे जगवइ वरा ॥ ७ ॥
 चि० ॥ सुणी हरखित कहे देव, महेर नजर महोटा
 तणी ॥ चि० ॥ थइ हुं जगविख्यात, जो प्रजु पोता

नी गणी ॥ ८ ॥ चि० ॥ विचरो देश विदेश, पण
मुज हृदय वसो सदा ॥ चि० ॥ श्री शुजवीरजिणंद,
वेह न देशो मुज कदा ॥ ए ॥ इति ॥ ए२ ॥

॥ अथ गहूंली त्राणुंमी ॥

॥ सुण वात कहुं साहेली रे, गुरु गुण गावा टेव प
डी ॥ नहिं आवे फरी आ एवी रे, पुण्यतणी आ
एक घडी ॥ सुण० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सहु सखी
यो मलीने चाली रे, गुरु आगल जइ पाय पडी ॥ ए
केक थकी अधिकेरी रे, गुरुगुण गाती हर्ष धरी
॥ सु० ॥ २ ॥ जव अनंता जमनां रे, पुण्य संयोगें
योग मल्यो ॥ जिनवाणी अती मीठी रे, सुरतरु महारे
आज फढ्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसारसमुद्रने तरवा रे,
जोने एहिज जाहज समी ॥ जिनवाणी अतिसारी
रे, जविजनने हृदयें अतिय गमी ॥ सु० ॥ ४ ॥ योग्य
जीवने हिनकारी रे, शांत सुधारस ए वाणी ॥ नय
निक्षेप प्रमाणी रे, अनेक गुणनी जे ग्याणी ॥ सु०
॥ ५ ॥ रत्नत्रयनुं कारण रे, तारण जव्यने एह स
ही ॥ सरस सुधारस जेहवी रे, देवेंद्रसूरियें एह
कही ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रभु मुखविटथी खरती रे, ग
णधर लीये चित्त धरी ॥ अंग उपांगनी रचना रे, नय

गम जंग अनेक करी ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रवचन कुशमे
 गुंथी रे, मुनिवर राजने कंठ ठबी ॥ देवेंद्र सूरि एम
 जांखे रे, जविजन प्राणी ए खेत जणी ॥ सु० ॥ ८ ॥
 स्वस्तिक पूरे मनरंगें रे, गुरु मुख जोती सुविशाखा ॥
 प्रेमेयी जविजन जात्रे रे, अमर लहे वर शिव वा
 ला ॥ जु० ॥ ९ ॥ इति ॥ ए३ ॥

॥ अथ रूपयानी गहूंली चोराणुंमी ॥ धोखनी देशीमां ॥
 ॥ देश मूलकने रे परगणां, हाकम हुकम करंत ॥
 ठडिदार चोपदार उजळा, ए सहु महोटा जाड धरंत ॥
 रूपयानी शोजा रे शी कहूं ॥ १ ॥ कसवी ठोगाली
 पासखी, रथ धरी घुघरमाळ ॥ संवक हीं रे मलप
 ना, धनपाळ घोडीनी चाळ ॥ रूपया० ॥ २ ॥ उंचा उंचा
 मंदिर माखियां, खाजलीयाळा ठे गांव ॥ कोरणी
 याळा ठे गोख ॥ रु० ॥ ३ ॥ आवां वेसां रे सहु करे, वली
 दीये आदर मान ॥ तांयें पण वेम नहीं, नहीं सां
 जखे देइ कान ॥ रु० ॥ ४ ॥ निर्धन आवां रे हुक
 डो, न दीयें आदर मान ॥ महोडुं मरडी नीचुं जण,
 पग मेळवानुं नहिं ठाम ॥ रूपया० ॥ ५ ॥ ग्रंथ
 विनातो रे गांगळा, गरथें गांगारे शेत ॥ गरथविनाता
 रे शंठीया, दीसे करता रे वेठ ॥ रु० ॥ ६ ॥ विवा

દે॥ એતો ઘિચ ઘિચ શ્રંગને વાલી હો ॥ એ તો વાલી
 રે સુકુમાલી રે, જાલી મુખહું ધીરનું જી ॥ ૬ ॥ લલી
 લલી દેતી હવારણાં ॥ દે॥ ॥ એતો સમકિત નિર્મલ
 કરતી હો ॥ એતો ધરતી રે ગુણ ધરતી રે, જિહાં પ્રજુજી
 વિચરતા જી ॥ ૭ ॥ એળી પરે નાચી નમી કરી ॥ દે॥
 એતો અનુજવ સુખ મતવાલી હો ॥ એતો ગાલી રે નિજ
 જવ ટાલી રે હુઃખહું પહોતી સ્વર્ગમાં જી ॥ ૮ ॥ વા
 ચક રામવિજય કહે ॥ દે॥ ॥ એતો સમકિતવંતની
 કરણી હો ॥ એતો વરણી જિનજકિ નીસરણી હો ॥
 શિવ મંદિર તળી જી ॥ ૯ ॥ ઇતિ ॥ ૯૫ ॥

॥ અથ ગઢૂંછી ઠઢુંમી ॥

॥ તે તરિયા જાણ તે તરિયા ॥ એદેશી ॥

॥ આજ નગરમાં મહિમા ઊઠવ, જલેં અમ્હ ગુરુ આ
 વ્યા રે ॥ સંઘ સહુને મનમાં જાવ્યા, આણંદ હરસેં વ
 ધાવ્યા રે ॥ આજ ૦ ॥ ૧ ॥ પંચ સમિતિ ત્રણ ગુણિયેં
 ગુણ, ઠકાય જીવને પાલે રે ॥ પંચ માહાત્મ સૂધાં
 ધારે, પંચાચારશું માલે રે ॥ આજ ૦ ॥ ૨ ॥ આગમ ગુ
 રુનો સાંજલી હર્ષિત, વંદન વહુ જન આવે રે ॥ નર
 નારીતો મલિ મલિ ટોલેં, ગુરુગુણ ગઢૂંછી ગાવે રે
 ॥ આજ ૦ ॥ ૩ ॥ શુભપરિણતિ વર પદ વિઠાણ આત્મ

मन रंगशु, सुणीयेंजी सूत्र विशाल ॥ मोरी० ॥ च०
 ॥ ३ ॥ धवल मंगल गावे मोरडी, वाजंते दोस नि
 शान ॥ मोरी० ॥ सखि सखि कीजें जी सुवर्णां, धर
 ताजी धर्मनुं ध्यान ॥ मोरी० ॥ च० ॥ ४ ॥ नगर
 लोक सहु हरखियां, बाध्योजी धर्मनो रंग ॥ मोरी० ॥
 धीरशासन मांहे पहवा, मलूक जाव थनंग ॥ मो० ॥ ५

॥ अथ चक्रेश्वरी मातानी गरवी नयाणुंमी ॥

॥ अथ चक्रेश्वरी रे चक्रेश्वरी मात, जोवाने जइयें ॥ जेद
 नां सोवन वर्णा गात्र, जोवाने जइयें ॥ ए आकाशी
 ॥ जोवा जइयें पावन थइयें, देखी मन गहगहरीयें
 रे ॥ एक तीरथ धीजी जगदंथा, वंदी रांपत सही
 यें ॥ जो० ॥ अ० ॥ १ ॥ आठ नुजासी अति खट
 कासी, मृगपति बाहन वासी रे ॥ जिनगुण गाती
 खेनी तासी, नीरथनी रखवासी ॥ जो० ॥ अ० ॥
 ॥ २ ॥ श्री सिद्धान्त गिरि पर गाजे, देखी देव समा
 जे रे ॥ रंगिन जासी गोंध पिराजे, घटी घटी घटी पा
 खां वाजे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाटडी खास गुलाब
 मोहावे, पीछा राता परणा रे ॥ बहु सोने छे जग
 जननीने, केशर कुंकुम बरणा ॥ जो० ॥ अ० ॥ ४ ॥
 सप्तके कर कंकणने चूडी, नवसरो ह्यडे दार रे ॥

रत्नजडित जांजर ठे चरणे, घूघरीयें घमकार ॥ जो०
 ॥ अ० ॥ ५ ॥ नाके मोती उज्ज्वल बाने, घाजुबंध
 वेहु घाहें रे ॥ केडें कटि मेखला रणजणती, ऊलके
 हीरा मांहे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ देश देशना न्हा
 ना महोटा, संघ खड् संघवी आवे रे ॥ ते सहु पहेलां
 श्रीफल चूनडी, जगजननीने चढावे ॥ जो० ॥ अ०
 ॥ ७ ॥ धन्य धन्य ए श्रीपुंरुगिरि जिहां, जगदंवा
 नो वास रे ॥ जे कोइ ए तीरथने सेवे, तेहनी पूरे
 आश ॥ जो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ संघवी संघतणी रखवा
 ली, श्रीजिन सेवाकारी रे ॥ दीपविजय कहे मांगलि
 क करजो, ठेवहु शोजा तारी ॥ जो० ॥ अ० ॥ ९ ॥

॥ अथ गहूंली शोमी ॥

॥ शामलिया शामजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानगुणें बर्या रे, अरिहा अजित जिणंद जग
 वान ॥ आर्वी समोसम्या रे, नयरी साकेतन उद्या
 न ॥ साथें पटोधरा रे, सिंहसेनादिक वर गणधार ॥
 एक लाख मुनिवरा रे, ज्ञान क्रियाना जे जंगार ॥ १ ॥
 क्षपक आरोहिने रे, मुनि गुणठाणे बधता जाय ॥
 वर निरमोहीने रे, केइ मुनि घाती करम खपाय ॥
 केइ परिपाटीयें रे, छुकर तप अजिग्रह करनार ॥

इम बहु घाटीयें रे, प्रजुने संघे ठे परिवार ॥ १ ॥
 सह देवें मलीरे, कीधुं समवसरण मंगाण ॥ वेवा
 मन रली रे, त्रीजा गढमां त्रिजुवन जाण ॥ जइ आ
 रामीयें रे, दीधी वधाइ प्रजुनी ताम ॥ पटखंन सा
 भीयें रे, पूरित मनोवंचित काम ॥ ३ ॥ बहु आडंय
 रें रे, आवे चक्रिसगर उत्साह ॥ जक्ति पुरस्सरें रे,
 वांदे प्रजुजीना पाय ॥ प्रजु दीये देशना रे, जवियण
 ने प्रेम प्रकाश ॥ चार प्रकारने अनुसरी रे, पामो
 जवियण जव निस्तार ॥ ४ ॥ सखीयें परवरी रे,
 नामें रत्न मुकेशा नार ॥ अति हरखें करी रे, पूरे
 मंगल थाठ उदार ॥ ग्रण स्वमासणें रे, वांदे वधावे
 चइ उमास ॥ रंगजरथी मुणे रे, प्रजुनां अमृत व
 यण रसास ॥ ५ ॥ इति ॥ १०० ॥

॥ अथ गहूंक्षी एकशो ने एकमी ॥

॥ छारिका नयरी सुंदरु ॥ तारुजी ॥ सहसावन अ
 जिराम हो ॥ गुणवंती गहूंक्षी करे फागमां ॥ यारुजी
 ॥ १ ॥ नेम जिणंद समोसखा ॥ ता० ॥ वन
 पासक दीये वधाइ हो ॥ गु० ॥ श्रीकृष्ण अग्रमही
 पी अष्टगुं ॥ ता० ॥ वंदन पढ्ह वजाय हो ॥
 ॥ गुरु० ॥ २ ॥ पंच अनिगम साचरी ॥ ता० ॥ वांदे

तिहां गोविंद हो ॥ गु० ॥ जगगुरु आगख गहूंली
 करे ॥ ता० ॥ देखी प्रभु मुख अरविंद हो ॥ गु० ॥
 ॥ ३ ॥ अरुणरत्न चोक उपरें ॥ ता० ॥ जकि कुंकुम
 रंग रोख हो ॥ गु० ॥ पंच प्रमादनी तर्जना ॥
 ता० ॥ पंच रत्न उवित अमोल हो ॥ गु० ॥ ४ ॥
 ज्ञान गुलाब उडावतां ॥ ता० ॥ तप अवीर ज
 रि जरि मृति हो ॥ गु० ॥ दर्शन पीचकारी जरी ॥
 ता० ॥ चारित्र परिमल उलंठी हो ॥ गु० ॥ ५ ॥
 जावना वसंत गाये तिहां ॥ ता० ॥ गिरुआ नेम
 नी पास हो ॥ गु० ॥ समकित फगुवा तिहां दिये
 ॥ ता० ॥ जेथी जाये जवनी काश हो ॥ गु० ॥ ६ ॥
 गहूंली एणी परे कीजीयें ॥ ता० ॥ पामे मुक्ति वि
 खास हो ॥ गु० ॥ पंक्ति ज्ञान शिवपद लहे ॥ ता०
 ॥ विनयें सफल होयें आश हो ॥ गु० ॥ ७ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने चेमी ॥

॥ रामचंदके वाग, चांपो मोरी रह्यो री ॥ ए देशी ॥
 चंपानयरी उद्यान, सुरतरु मोरी रह्यो री ॥ वीर प
 टोधर धीर, सोहम आस रह्यो री ॥ १ ॥ जीय कोह
 जीय मान, माया लोचन दह्यो री ॥ संपूरण श्रुतज्ञान,
 जिनवर विरुद बह्यो री ॥ २ ॥ आश्रव विषय प्रमाद,

निझा पंच तजेरी ॥ दशविध सामाचारी, षटविध जय
 णा जजेरी ॥ ३ ॥ उपकारें धरे वार, जावना तप
 पडिमारी ॥ निःकारण जगबंधु, रवि शशी मेह समारी ॥ ४ ॥
 कंचन कमल विचाल, वेसी धर्म कहेरी ॥
 जेहूथी जवियण लोय, आतम तत्त्व लहेरी ॥ ५ ॥
 कोणिक जूपति नारि, घोयली गेली करेरी ॥ मालक
 मोति वधाय, पुण्य जंमार जरेरी ॥ ६ ॥ जिनशास
 ननी जक्ति, करतां पाप हरेरी, सोहव सरिखे साद,
 घोयली गीत जणेरी ॥ ७ ॥ इति ॥ १०२ ॥

॥ अथ गहूंसी एकशो ने त्रणमी ॥ आठे साखनी देशी
 ॥ झानादिक गुणखाण, राजएही उद्यान ॥ गणधर
 साख ॥ सोहम सामी समोसख्या जी ॥ १ ॥ कंचन
 गौर शरीर, वाणी गंगा नीर ॥ ग० ॥ त्रिहुं पंथें प
 सरे सदा जी ॥ २ ॥ अंग उपांगह वार, दशविध
 रुचिनो धार ॥ ग० ॥ दुगविध शिद्धा उपदिसे जी

३ ॥ तेर क्रिया व्रत वार, गिद्धि पडिमा अगीया
 र ॥ ग० ॥ आवक गुण जेद सिद्धना जी ॥ ४ ॥
 यिनय वेय्यावश कल्प, धरे दशविध ठ अकल्प
 ॥ ग० ॥ घंदन दोष विकया तजे जी ॥ ५ ॥ कुंकुम
 रोख कचोख, गहूंसी करे रंगरोख ॥ ग० ॥ अक्षत श्री

પાછા ઉપરે જી ॥ ૬ ॥ મંગલાધિપત્રી નારી, શોભ સ
 જી શણગાર ॥ ગ૦ ॥ લલિ લલિ કરતી લૂઠણાં જી
 ॥ ૭ ॥ જોતી ગુરુમુખ વંદ, પામતી પરમાનંદ ॥ ગ૦ ॥
 ચતુર ચકોરદી ગોરદી જી ॥ ૮ ॥ સુરવધૂ નરવધૂ
 કોટિ, મલિ મલિ સરસી જોડિ ॥ ગ૦ ॥ ગાવે જિન
 શાસન ધણી જી ॥ ૯ ॥ ઇતિ ॥ ૧૦૩ ॥

॥ અથ ગઢુંલી એકશો ને ચારમી ॥

॥ પંચમ પદને ગાણ્યે રે ॥ ૯ દેશી ॥

॥ શ્રુતનાળી શ્રુતધર ગુરુ રે, પંચાશ્રવના ત્યાગી રે
 ॥ દશત્રિક વેત્તા જાવ સમેતા, સંવરતપ સોજાગી ॥
 ધન ગુરુ વંદો રે ॥ વંદો રે જગત હિતકાર ॥ ધન૦ ॥
 ॥ ૧ ॥ આંકણી ॥ ૧ ॥ જીવાન્નિગમ ય સૂત્રજમાંદે,
 જીવાજીવ વિચાર રે ॥ ઇગ ડુ તિ ચઠ પણ ઠવિદ્યા,
 જૂજૂથ્યા જ્ઞેદ ઠદાર ॥ ધન૦ ॥ ૨ ॥ શશી રવિ પ્રહ
 નક્ષત્ર તારા, જંબુ લવણે ધમણા રે ॥ ધાણ્ય ત્રિગુણા
 જાણજો સઘલે, ચઠદિશિ ફરે પરિજમણા ॥ ધન૦
 ॥ ૩ ॥ ઇણ પરે દેશના દિયે ગુરુ નાળી, પુણ્ય પાપ
 ડંઢલાળી રે ॥ શ્રદ્ધા જાસન તત્ત્વરમણથી, થાયે
 અનુજવ નાળી ॥ ધન૦ ॥ ૪ ॥ શ્રદ્ધાવંત સુશ્રાવિકા
 રે, નિમુળી શ્રીજિનવાળી રે ॥ સન્મુખ જોતી અદ્યત

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

संचरिया ॥ चा० ॥६॥ विजयराज सूरिश्वगठराया,
 पट्टोधर चंद्रोदय गाया ॥ जिनवाणी सुधारस पा
 या, जवि जीवें निर्मल गुण गाया ॥ चा० ॥७॥ १०६॥
 ॥ अथ गहूंली एकशो ने सातमी ॥ थारा महेला उपर
 ॥ मेह जरूखे वीजली ॥ हो खाल ॥ ऊ० ॥ ए देशी ॥
 ॥ शोल करी शणगार, सोहागण जामिनी हो खाल ॥
 सोहागण जामिनी ॥ उढी नवरंग घाट, चाले गज
 गामिनी हो खाल ॥ च० ॥ शीलवती कर थाल, ग्रही
 कुंकुम जरी हो खाल ॥ ग्रही० ॥ आवे समोसरण
 माहे, हैये उलट धरी हो खाल ॥ हैये० ॥ १॥ सिंहा
 सन मणि पीठ, विराजत जगधणी हो खाल ॥
 विरा० ॥ वीरजिनेश्वर वाणि, तखाणे अति घणी
 हो खाल ॥ वखा० ॥ पट घटि पर्यंत, प्रकाशे परवडो
 हो खाल ॥ प्रका० ॥ नैगम अर्थ प्रवाह, त्रिजुवन
 दीवडो हो खाल ॥ त्रिजु० ॥ २॥ कुमति मत अंधकार,
 हरे ज्युं दिनमणि हो खाल ॥ हरे० ॥ पारंपद हर्षित
 थाय, लहे जिम सुरमणि हो खाल ॥ लहे० ॥ सुणी
 ॥ वाणी, करे गुण गहूंअली हो खाल ॥ करे० ॥
 ॥ चोखा मान, सोपारी ऊजली हो खाल ॥ सो
 ॥ ३॥ वधावे मुनिराय के, दिलमांहे हरखती



पाप वचन नवि बोले जी ॥ केसर चंदनैं जिन सवि
 पूजे, जवजय बंधन खोले जी ॥ नाटक करीने वा
 जित्र बजाडे, नर नारीने टोलैं जी ॥ गुण गावे जि
 नवरना इण विध, तेहने कोइ न तोले जी ॥ २ ॥
 अछम जत्त करी छइ पोसह, बेसी पौषध साझे जी
 ॥ राग छेप भद मत्सर ठांकी, कूड कपट मन टाळे
 जी ॥ कल्पसूत्रनी पूजा करीने, निशिदिन धमैं माले
 जी ॥ एहवी करणी करतां श्रावक, नरक निगोदिक
 टाळे जी ॥ ३ ॥ पडिक्कमणुं करियें शुद्ध जावें,
 दान संवत्सरी दीजें जी ॥ समकेतधारी जे जिन
 शासन, रात्रि दिवस समरीजें जी ॥ पारणवेला पडि
 खाजीने, मनोवांछित महोत्सव कीजें जी ॥ चित्त चोखे
 पजूसण करशे, मनमान्यां फल लेशे जी ॥ ४ ॥ १०८ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने नवमी ॥

॥ वीरजीने वचने अमृत रस जरेरे ॥ ए देशी ॥

॥ जक्ति करीजें रे जवि श्रुतधर तणी रे, जेहनी सा
 ख जरे जिणदेव ॥ संदेह पूठीजें नित मेव ॥ जक्ति०
 ॥ १ ॥ तुंगीया नामें रे नगरी अति जखी रे, जिहां
 श्रावक घारे व्रतधार ॥ जेहनां मोकलां घर तणां
 धार ॥ जक्ति० ॥ २ ॥ गुणना रागी रे जाण नवत

॥ गहूंली एकशो दशमी ॥

॥साहेली महारी राजपट्टी उद्यान, प्रभुजी समोस
 ख्या रे लोल ॥सा०॥ गणधर मुनिवर सहस्र, चौद
 शुं परिवस्था रे लोल ॥सा०॥ करता नवि उपकार,
 दया मन धारीने रे लोल ॥ सा० ॥ सकल जंतु प्र
 तिपाल, विरुद संजारीने रे लोल ॥ १ ॥ सा० ॥ श्री
 धो ठे अवतार, जगत प्रतिबोधवा रे लोल ॥सा०॥
 चउगइ दुःख जंजाल, प्रतिमल रोधवा रे लोल ॥सा०॥
 अणहूंते सुरकोडि, सेवामां नित्य रहे रे लोल ॥ सा०॥
 कर जोडी मोडी मान, आणा शिग निर्वहे रे लोल ॥
 २ ॥ सा० ॥ चार निकायना त्रिदश, मली त्रिगडो करे
 रे लोल ॥ सा० ॥ चार गाउ परमाण, चतुर्मुख उच्च
 रे रे लोल ॥सा०॥ जिनमुखपूर्व पाय पीठ, विराजे
 गणधरू रे लोल ॥सा०॥ आठ पर्पदा सुग्गज, चार
 तिहां नरवरू रे लोल ॥३॥सा०॥ कहे वनपाल जूना
 थने, नाथ जी पधारिया रे लोल ॥सा०॥ मगधाधि
 प जूपाल, जुजाल मनरंजीया रे लोल ॥ सा० ॥ देइ
 वधामणी सार के, जिनगुण गावतो रे लोल ॥सा०॥
 कंचन रजत ते आठ, दूरथी वधावतो रे लोल ॥
 ४ ॥सा०॥ दय गय रह जड चतुरंग, सेन्य जरजारशुं



॥ स० ॥ शास्त्र तणे अनुसारें रे ॥ २ ॥ स० ॥ स
 मता गुणना दरीया रे ॥ स० ॥ क्रिया पात्रना जरी
 या रे ॥ स० ॥ ज्ञान तणा जंडार रे ॥ स० ॥ क
 हेतां न आवे पार रे ॥ ३ ॥ स० ॥ मधुरी वाणी
 ये जांखे रे ॥ स० ॥ संघ स्वाद सर्वे चाखे रे ॥ स०
 प्रश्न व्याकरण वंचाय रे ॥ स० ॥ आश्रव संवर अ
 र्थ थाय रे ॥ ४ ॥ स० ॥ उपर चरित्र वंचाय रे ॥
 ॥ स० ॥ पृथ्वीचंद कुमार रे ॥ स० ॥ सुणतां बैरा
 ग्यवंत थाय रे ॥ स० ॥ अज्ञान मिथ्याय हुठावे रे
 ॥ ५ ॥ स० ॥ षट चेला तमें जाणो रे ॥ स० ॥
 विनय गुणनी खाणो रे ॥ स० ॥ जोवन वयमां ठे
 सरखा रे ॥ स० ॥ वंदो पूजो ने हरखो रे ॥ ६ ॥
 स० ॥ जंगम तीरथ कहीयें रे ॥ स० ॥ वंदीने पा
 वन थड्यें रे ॥ स० ॥ संघना पुण्यें अर्हीं थाव्या रे
 ॥ स० ॥ जैनधर्मने दीपाव्या रे ॥ ७ ॥ स० ॥ जाव
 सहित जक्ति करजो रे ॥ स० ॥ पुण्यनी पोठी तमें
 जरजो रे ॥ स० ॥ जरतबाहु पेरें तरशो रे ॥ स० ॥
 समुद्रपार उतरशो रे ॥ ८ ॥ स० ॥ व्रत पंचस्काण
 घणां थाय रे ॥ स० ॥ सात क्षेत्रें धन खरचाय रे
 ॥ स० ॥ देहरे देहरे जंठव मंजाय रे ॥ स० ॥ चोथो

धारो धरताय रे ॥ ए ॥ स० ॥ सधया श्री गहंली क
 हाडे रे ॥ स० ॥ मुक्ताफलशुं पधाय रे ॥ स० ॥ ना
 गर पानामुत गावे रे ॥ स० ॥ मगन लागे मुनि
 पावे रे ॥ स० ॥ पास जिनंदने पूजो रे ॥ स० ॥ पु
 नियामां देव न दूजो रे ॥ १० ॥ इति ॥ १११ ॥

॥ अथ मुनिराज श्री मोहनखाखजी माहाराजनी ॥

॥ गहंली एकशो धारमी ॥

॥ हो मुनिवरजी, तुज अति मीठी बाणी मुज म
 नमां वसी ॥ ए अंकणी ॥ तमें जविक जनोने घोधो
 ठो, मुक्ति तणो मारग शोधो ठो, बलि काम कपायने
 रोधो ठो ॥ हो मुनि० ॥ १ ॥ तमें जवसागरथी तरि
 या ठो, अगणित गुणोथी जरिया ठो, बली ज्ञानतरंग
 ना दरिया ठो ॥ हो मुनि० ॥ २ ॥ तुम दरिसनथी
 दूरित जावे, सवि जन बलि सुख संपत्ति पावे, नर
 नारी मलीने गुण गावे ॥ हो मुनि० ॥ ३ ॥ तुम मु
 ख कमळाकर शोजे ठे, जविजन जमराने थोजे ठे,
 मन शुक्तिरमामां खोजे ठे ॥ हो मुनि० ॥ ४ ॥ एवा
 मोहनखाखजी मुनिराया, तजी चित्तथकी जेणें मा
 या, हिराखाख कहे में गुण गाया ॥ हो मुनि० ॥ ५

॥ अथ मुनिराज श्रीमोहनलालजी माहाराजनी ॥

॥ गङ्गोत्री एकशोने तेरमी ॥

॥ मुनिवर संयममां रमता. शिवपुर जावानो स
प करना. अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकण

॥ मुनिवर विचरना आख्या पट चेला साथें लाव्या
मुंघडेना मंघने मन गाव्या ॥ मुनिवर० ॥ शि०

अहो० ॥ १ ॥ मुनिवर संयममां शुरा. मुनिवर वि
रियामां पुरा परिणामें मुनि अति रुडा ॥ मुनि०

शि० ॥ अ० ॥ २ ॥ मुनिजीनी देशना बहु सारी
जविजननं लागे प्यारी प्रतिबोध पाभ्यां नर नारी।

मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुनिवरे खान घण
सीधा, श्रीसंघनां कारज अति सीधां, उपकार एवा

माहा मुनियें कीधा ॥ मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ मु
नाम घणुं सारु, मोहनलालजी लागे प्यारु

जिनशासन घणुं अजवाह्युं ॥ मु० ॥ शि० ॥ अ०
५ ॥ जे मुनिवरना गुण गावे, शिवपुर नगरी वे

जावे, मनग कहे मुनिवरने ध्यावे ॥ मु०
॥ अहो० ॥ ६ ॥ इति ११३ ॥

॥ અથ મુનિરાજ શ્રી શાંતિવિજયજી માહારાજ

॥ ની ગહંલી એકશેને ચોદમી ॥

॥ નેક નજર કરો નાથજી ॥ ૫ દેશી ॥

॥ શાંતિવિજય મુનિ ચંદિયેં, જેથી જવતરુકંદ નિકંદી

યેં જીહો, શાંતિવિજય મુનિ ચંદીયેં ॥ ૫ આંકણી ॥

જેની અમૃત ધારા સારિલી, ગુણલાણી વાણી વલા

ણીયેં જી હો ॥ શાંતિ ॥ ૧ ॥ નિત્ય ઠઠ અઠમ તપ

સ્યા કરે, જેનું સદાપ ધ્યાનમાં ધ્યાન ઠે જીહો ॥

શાંતિ ॥ ૨ ॥ જેનાં જ્ઞાન તણો મહિમા ઘણો, મા

નું કેવલી હું કલિકાલમાં જી હો ॥ શાંતિ ॥ ૩ ॥

જેણે મમતા તજી સંસારની, એક મુક્તિણી મમતા

કરી જી હો ॥ શાંતિ ॥ ૪ ॥ હિરાલાલ કહે મુનિ તે

નમો, જેથી પાપ જશે સર્વ દૂરથી જી હો ॥ શાંતિ ॥ ૫ ॥

॥ અથ માહામુનિરાજ શ્રી આત્મારામજી માહારાજની

॥ ગહંપ્રી એકશે ને પંદરમી ॥

॥ સાંજણો રે મુનિ સંયમરાગી, ઝપશમધ્રેણેં ચહિ

યા રે ॥ ૫ દેશી ॥ જમું ઘયું રે મારે મુગુરુ પધાર્યા,

જિન આગમના દરિયા રે ॥ ૫ આંકણી ॥ જ્ઞાન

તરંગેં છેદેરો છેતા, જ્ઞાન પવનથી ઝરિયા રે ॥ જમું ॥

॥ ૧ ॥ આજ કાલમાં જે જિન આગમ,

मां आवे रे ॥ गहन गहन एहना जे अर्थो, भ्रगट क
 रीनें बतावे रे ॥ ज० ॥ २ ॥ शक्ति नहिं पण जक्ति
 तणें वश, गुण गावा उल्लासावुं रे ॥ कर्णामृत गुरु
 चरित्र सुणावी, आनंद अधिक वधावुं रे ॥ ज०
 ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशि जंबुद्वीपमांहि, एही नरतम
 ऊार रे ॥ उत्तर दिशि पंजाब देश जिहां, सेहेरां गाम
 मनोहार रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ क्षत्रियवंश गणेशचंद घर,
 जन्म लिया सुख धामें रे ॥ रूपदेवी कुक्षिशुक्तिमां,
 मुक्ता फल उपमानें रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ लघुवयमां प
 ण लक्षणथी बहु, दीपंता गुरुराया रे ॥ संगतिथी म
 स्त्री हृंदक जनने, हृंदकपंथ धराया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥
 संवत् श्योगणीशें दशमांही, उज्ज्वल कार्तिक मा
 सें रे ॥ पंचमीने दिवसें खिइ दीक्षा, जीवनराम गु
 रु पासें रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ ज्ञान जण्या बली देश फि
 र्या बहु, जूनां शास्त्र विखोकी रे ॥ संशय पडिया गुरु
 नें पूछे, प्रतिमा केम उवेखी रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ उत्तर
 न मिष्ट्या जब गुरुजीनें, ज्ञानफला घट जागी रे ॥ सुम
 सखी घट थाय बसी जब, हृंदपंथ दिया त्या
 गी रे ॥ ज० ॥ ९ ॥ धर्म शिरोमणि देश मनोहर,
 गुर्जर जूमि रसाखी रे ॥ ज्यां आवी सुविहित गुरुपा

पंचाचारने पालता, टालता कर्मनो चार हो ॥ सू०
 ॥ स० ॥ ठठ अठमादिक तप करे, वारे विषय विकार
 हो ॥ सू० ॥ ५ ॥ स० ॥ गंगाजलसम निर्जला, गुण
 ठत्रीशना धार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ रत्नसागर सूरि
 पटधरु, लब्धितणा जंकार हो ॥ सू० ॥ ६ ॥ स०
 विचरंता गुरु आगिया, सुथरी शहेर मजार हो ॥
 ॥ सू० ॥ स० ॥ सुरगुरुसम बाणी बाणी सुणी, हरख्यां
 सवि नर नार हो ॥ सू० ॥ ७ ॥ स० ॥ उगणीश
 शें पिस्तालीशें, माहाशुदि त्रिज रविवार हो ॥ सू० ॥
 ॥ स० ॥ जाग्यवंत दीक्षा लिये, संघ चठविध मनो
 हार हो ॥ सू० ॥ ८ ॥ स० ॥ दीक्षामहोत्सव हर्ष
 करी, पामी हर्ष उद्वास हो ॥ सू० ॥ स० ॥ वास
 क्षेप सूरियें कख्यो, देवा मुक्तिनो वास हो ॥ सू० ॥
 ॥ ९ ॥ स० ॥ ठठव रंग बधामणां, हृवे जय जय
 कार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ चिहुं गति पूरण साथि
 यो, करे सोहागण नारि हो सू० ॥ १० ॥ स० ॥ गु
 णगुण गहंली गावतां, पातक दूर पखाय हो ॥ सू० ॥
 स० ॥ पाटण रहेवासी शामजी, सूरितणा गुण गाय
 हो ॥ सू० ॥ ११ ॥ इति ॥ ११६ ॥

॥ अथ अचलगुप्तपति पूज्य जटारक श्री विवेक :

॥ सागर सुरिनी गहूंड़ी एकशो ने सत्तरमी ॥

॥ रंग रसिया रंगरस घन्यो ॥ मनमोहनजी ॥ ए देशी

॥ श्री सरसति पद ग्रणमियें ॥ गुरु सुखकारी ॥ गा

यशुं गद्यपति राय ॥ मनहुं मोक्षुं रे गुरु सुखकारी ॥

॥ ए थांकाणी ॥ शासनदेवी पसायथी ॥ गु० ॥ सेव

तां सवि सुख थाय ॥ म० ॥ गु ॥ १ ॥ अचलगुप्त

पति जाणियें ॥ गु० ॥ श्रीरजसागर सूरिराय ॥ म० ॥

॥ गु० ॥ तास पटोधर दीपता ॥ गु० ॥ श्रीविवे

कसागर सूरि राय ॥ म० ॥ गु० ॥ २ ॥ कछदेश

सोदामणो ॥ गु० ॥ लघु आसंबियो मन जाण ॥

म० ॥ गु० ॥ गोत्रदेव्या दीपता ॥ गु० ॥ कुञ्ज

ऊ लंसवंश पत्माण ॥ म० ॥ गु० ॥ ३ ॥ टोकरसी नु

त शोजता ॥ गु० ॥ जननी कुंता वाइ मात ॥ म० ॥

गु० ॥ वंशविजृपण जाणियें ॥ गु० ॥ नामविवेक

सिंधु विख्यात ॥ म० ॥ गु० ॥ ४ ॥ मांडवी वंदर

मनोदर ॥ गु० ॥ श्री संपने अतिपणो प्यार ॥ म० ॥

गु० ॥ संप चतुर्विध मर्छी करी ॥ गु० ॥ करे पा

ट महोत्सव सार ॥ म० ॥ गु० ॥ ५ ॥ संवत ठंग

पीश अठारपीश ॥ गु० ॥ कार्तिक बदि पंचम पार

॥ म० ॥ गु० ॥ आचारज पद पामिया ॥ गुं० ॥
 तिहां शोजे शुज शनि वार ॥ म० ॥ गु० ॥ ६ ॥
 गीतारथ गुरु आगलें ॥ गु० ॥ शिष्य शोजे सवि
 सार ॥ म० ॥ गु० ॥ जाचकजन संतोषिया ॥ गु० ॥
 जस वध्यो मन प्यार ॥ म० ॥ गु० ॥ ७ ॥ मुक्ता
 फल मूठी जरी ॥ गु० ॥ रचे गहूंली परम उदार ॥
 ॥ म० ॥ गु० ॥ गुणवंत गावे प्रेमशुं ॥ गु० ॥
 गुरु वंदे वारं वार ॥ म० ॥ गु० ॥ ८ ॥ अचलगढ
 पति दीपता ॥ गु० ॥ श्री विवेकसागर सूरिराय
 ॥ म० ॥ गु० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणमतां ॥ गु० ॥
 श्रीसंघने कल्याण थाय ॥ म० ॥ गु० ॥ ए ॥ ११७ ॥
 ॥ अथ अचलगढपति पूज्यजट्टारक श्रीविवेकसागर
 सूरेश्वरनी गहूंली एकशो ने अढारमी ॥
 ॥ आ आप उठी उतावली ॥ सहि मोरी रे ॥ में सांजली
 मीठी वाण ॥ लागे मुने प्यारी रे ॥ आ आचारज गुरु
 आविया ॥ स० ॥ आ जह्नुपुर बंदर मजार, वात स
 ॥ रे ॥ १ ॥ आ चरण करण व्रत धारता ॥ स० ॥
 आबक दीये बहुमान, पुण्य पनोतां रे ॥ आ समि
 ति गुति सूधी धरे ॥ स० ॥ आ पाळे प्रवचन माय, पा
 मे ठकुरी रे ॥ २ ॥ आ दश अर्छने दिये देशवटो

॥ १ ॥ शेर साडणशा कुलें आया रे, माता जु
 मावाइना जाया रे, तेथी गुरुजीशुं अधिकेरी माया
 ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ २ ॥ करतां एणे देश विद्वा
 र रे, होशे पुण्यजी खान उदार रे, मिथ्याखी होशे
 व्रतधार ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ३ ॥ जुजनगरमांहे
 अधिकारी रे, शेर शिवजीशा समकेतधारी रे, ते तो
 वाट जुवे ठे तमारी ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ४ ॥
 शेर खामण ने काटीया उमवाख रे, बोरा चुखड ने बगो
 डा उदार रे, जुजनगर देवाणी मेवाख ॥ सू० ॥ जु०
 ॥ सू० ॥ ५ ॥ रुचियंती मुश्राविका आये रे, श्रद्धा स
 मकित स्वस्ति बनाये रे, गुरु सन्मुख मोतीयें यथाये
 ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ६ ॥ हरे रुद्धिने मुख सया
 ई रे, अचख गडमां नित्य नित्य थाड रे, माझिष्यका
 री ठे माहाकाशी ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ७ ॥
 गुरु चारे चोमासां आया रे, सद्धियें गोनम रुद्धि
 पाया रे, मुक्तिसागर मूरि नवाया ॥ मुरीश्वर विन
 ति अवधारो रे ॥ जु० ॥ सू० ॥ ८ ॥ ११९ ॥

॥ गहूंखी एकशो ने वीशमी ॥

॥ जंगमनीयं विचरंता, करना देश विहार ॥ जगि
 क जीव प्रतिपूज्या, करता जग उपकार ॥ १ ॥

ते मुनिवर तारे तरे ॥ ए आंकणी ॥ समिति गुप्ति सूधी
 धरे, पाले प्रवचन माय ॥ अजय दान मुनिवर दि
 ये, पाले जीव ठकाय ॥ ते० ॥ २ ॥ पंच माहाप्रत
 धारता, पंचाश्रव पंचस्काण ॥ अष्ट मदने मुनि गा
 खता, पाले पंचाचार ॥ ते० ॥ ३ ॥ छादश पडि
 माने शोधता, करता आत्मशोध ॥ तप जप करे
 मुनि आकरां काढे कर्मनुं सूड ॥ ते० ॥ ४ ॥ सम
 वाणी करे गोचरी, पाले दोष विशेष ॥ उंच नीचकु
 ल जोवतां, नहिं सोजनो लेश ॥ ते० ॥ ५ ॥ केशी
 गणधर पधारिया, सावधिनयरी उद्यान ॥ राय पर
 देशी माहा पापीयो, धरे साधुनो छेप ॥ ते० ॥ ६ ॥
 प्रश्न पूठे मुनिवर प्रत्ये, जीव अजीव विचार ॥ स्वर्ग
 नरक जाणुं नही. न गणुं पुण्य ने पाप ॥ ते० ॥ ७ ॥
 नय उपनय प्रश्न पूरिया, प्रतिवृत्तयो भूपाख ॥ एक
 अक्षतारी ते पयो, पाम्यो मुक्ति माहाराज ॥ ते० ॥ ८ ॥

॥ गहंली एकशो ने एकवीशमी ॥

॥ आज सखि गुरु वंदन करीये, वंदन करीये तो
 जय जल तरिये हो साम, आज सखि गुरुवंदन करीये
 ॥ ए आंकणी ॥ गच्छति गणधरना गुण गाठें, हरख धरी
 मनमांदे हो साम ॥ आज ॥ १ ॥ मूरि शिरोम

णि गुण रागी, कनक रमणीना त्यागी हो सा० ॥ आ० ॥
 पंच समिति त्रण गुप्ति विराजे, प्रवचनमायने पासे
 हो सा० ॥ आ० ॥ १॥ चरण करण सित्तेरी संजारे,
 ज्ञान कल्लोख उठावे हो सा० ॥ आ० ॥ ठत्रीश ठत्रीशी
 गुण राजे, पट दर्शनमां गुरु गाजे हो सा० ॥ आ० ॥
 ॥ ३ ॥ वरसे ठन्हु गुणें गुणवंता, सोढम जंबु महं
 ता हो सा० ॥ आ० ॥ देश काल महिलें विचरंता, सम
 कित धीजना दाता हो सा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ राजगृही
 नगरीयें पधाव्या, श्रेणिक सामश्युं लाव्या हो ॥ सा०
 ॥ आ० ॥ मंत्री अजय कुमार प्रधान, यथोचित गु
 णना जाण हो सा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ चेलणा प्रमुख
 सह्य परिवार, गुरुने बांदे बहु मान हो सा० ॥ आ०
 आतम धाजोठ पीठ बनावी, गहूंली करे रढियाली
 हो सा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुंकुम घोखी स्वस्तिक पूरे,
 श्रेणिकनी पटराणी हो सा० ॥ आ० ॥ लखि लखि
 ॥ मुख सूवणां करती, शिवनिश्रेणीयें चढती हो
 ॥ आ० ॥ ७ ॥ गुरुमुख कमल नयणें रे जो
 वचन सुधारस पीती हो सा० ॥ आ० ॥ देशना
 नी दरख जराणी, देव जणे मधुरी वाणी हो ॥
 सा० ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १२१ ॥

॥ अथ श्री कोठारानी गहूली एकशो ने बावीशमी ॥
 ॥ जीरे मारे प्रणमुं जिनवर पाय, मूकी मननो आ
 मखो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे शोखमां श्रीजिनराय,
 शांतिनाथ जी करुणा करो ॥ जीरे जी ॥ १ ॥ जी०॥
 पामी तास पसाय, गह्वपति गुरु स्तवना करुं ॥ जी०
 ॥ जी०॥ जंगम तीरथनाथ तीर्थ चंदावो कृपा करी
 ॥ जी० ॥ २ ॥ जी० ॥ वृद्ध उंसवंश उत्पन्न, गुरुकुल
 वासे दिनमणि ॥ जी० ॥ जी० ॥ रत्न प्रयना निधान
 माता कुंता घाश्यें जनमिया ॥ जी०॥३॥ जी० ॥ ग्रह
 गणमां ज्योतिचक्र, अविचल राज्यें ध्रुव रहे ॥ जी०॥
 जी० ॥ मुनि परिवारमां तेम, गुण ठत्रीशे शोजता ॥
 जी० ॥ ४ ॥ जी० ॥ वारे परनो ठाठ, निज आत्म
 गुण अनुसरे ॥ जी० ॥ जी०॥ कोठारा नगर मजार,
 आषक लोक सुखिया बसे ॥ जी० ॥ ५ ॥ जी०॥ गुरच
 रणे सयलीन, रागी सोजागी करे धीनति ॥ जी०॥ जी०
 नर नारीनां वृंद, बहु आरुंवरें खावीया ॥ जी० ॥ ६ ॥
 जी० ॥ नव शत सजी शणगार, आविका खावे गहूं
 अली ॥ जी० ॥ जी० ॥ आत्म घाजोठ पीठ, प
 धिनी पूरे साधयो ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ समकित
 श्री फल हाय, सली खली खीये सुठणां ॥ जी० ॥

॥ जी० ॥ घूंघट खोल्या घाट, विच विच गुरुमुख
 जोवती ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ देशना अमृतधार,
 सांजली श्रोता रस लीये ॥ जी० ॥ जी० ॥ नय गम
 जंगनी जाल, स्यादवाद रचना करे ॥ जी० ॥ ८ ॥
 जी० ॥ विधि पङ्कगठ शिरताज, रत्नसागर सूरीश्वर
 ॥ जी० ॥ जी० ॥ तस पाटें पूरींद, विवेक सागर
 तेजें तपे ॥ जी० ॥ १० ॥ इति ॥ १११ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने त्रैवीशमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उढे दोय पंखीयां ए देशी ॥
 ॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया ॥ नामें सो
 हम स्वामी, जविकमन जाविया ॥ विषय प्रमाद कपा
 य, हास्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, निजपरि
 णति जजी ॥ १ ॥ नीरागी जगवान्, करे गुणदेशना ॥
 उपकारी असमान के, तारे जविजना ॥ सुणवा जि
 नवर वाणि, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारीना थोक
 के, हर्ष मने बहु ॥ २ ॥ वसन आचूपण व्रत, तणा
 अंगें धरे ॥ कोणिकचूपति नार, हवे गहूंली करे ॥
 सायें आवती ॥ आरम अ
 ॥ ३ ॥ श्रद्धा कुंकुम घोली,
 आत्म पीठने उपर, जिनगुण

गावती ॥ यिनयवती यदुमानपी, एम गहंसी करे ॥
 अनुजवनां करि लूठणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥
 डव्यजावथी इणि परें, जे गहंसी करे ॥ समफिनयंत
 तेआधिका, जयत्तायर तरे ॥ मणि उद्योत गुरुराजना,
 गुणसखि मन धरो ॥ पामी मनुज अघतार के,
 शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥ १२३ ॥

॥ अथ गहंसी एकशो चोवीशमी ॥

॥ चाखो सखि जइयें जातरा रे खोल, जिहा ठे
 मरुदेवीनो नंद, शुनजावथी रे ॥ चाखो जइयें जिन
 वांदवा रे खोल ॥ १ ॥ चाखतां चरण पावन थयां रे
 खोल, आत्म हर्ष जराय शुज ॥ चा० ॥ वीरवशीमां
 पेसतां रे खोल, नयणां पावन थाय ॥ शु० ॥ चा०
 ॥ २ ॥ दशशत चैत्य सोहामणां रे खोल, वशें अष्टा
 पद उत्तंग ॥ शु० ॥ चा० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरां
 रे खोल, चोमुख प्रतिमा चार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ३ ॥
 पूर्व छारें पेसतां रे खोल, निस्सर्ही कही त्रण वार
 ॥ शु० ॥ चा० ॥ पांच अजिगमन साचवी रे खोल,
 प्रदक्षिणा त्रण वार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ४ ॥ मूलनाथ
 क रुपननाथजी रे खोल, अजितनाथ शिवसाथ ॥
 शु० ॥ चा० ॥ चारे डुवारें विवथापना रे ॥

द्वावश दोष चार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ५ ॥ जिनप्रति
 गा जिनगारमी रे सोख, कपनजी पूर्वे प्रसिद्ध ॥
 शु० ॥ चा० ॥ अष्टावद गिरि सिद्ध यथा रे सोख,
 मक्षिन पुर्वे कश्यो विक्रम ॥ शु० ॥ चा० ॥ ६ ॥ शेव
 नरमी मुन झीरजी रे सोख, कुंथर अंग सुजात ॥
 शु० ॥ चा० ॥ तत नार्या शुक्रपक्षिणी रे सोख, उत
 म कुसं उरपन्न ॥ शु० ॥ चा० ॥ ७ ॥ दान शीयन्न
 सपस्या गुण रे सोख, पुरयाई जग विख्यात ॥ शु०
 चा० ॥ मुगुरु संजोग वपदेशथी रे सोख, चैत्य कस्या
 चोसार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ८ ॥ समकितहृद गुण आ
 र्त्ता रे सोख, ज्ञान जक्ति निमित्त ॥ शु० ॥ सफल
 जयो दिन आजनो रे सोख, देवयात्रा फल सिद्ध ॥
 शु० ॥ चा० ॥ ९ ॥ कल्पवृक्ष फल्यो पुण्य अंकुरथी
 रे सोख, मुक्ति वर्या सुख जरपूर ॥ शु० ॥ चा० ॥ १० ॥

इति श्रीगङ्गुली संप्रदास्य पुस्तकस्य
 प्रथमजागः समाप्तः ॥

